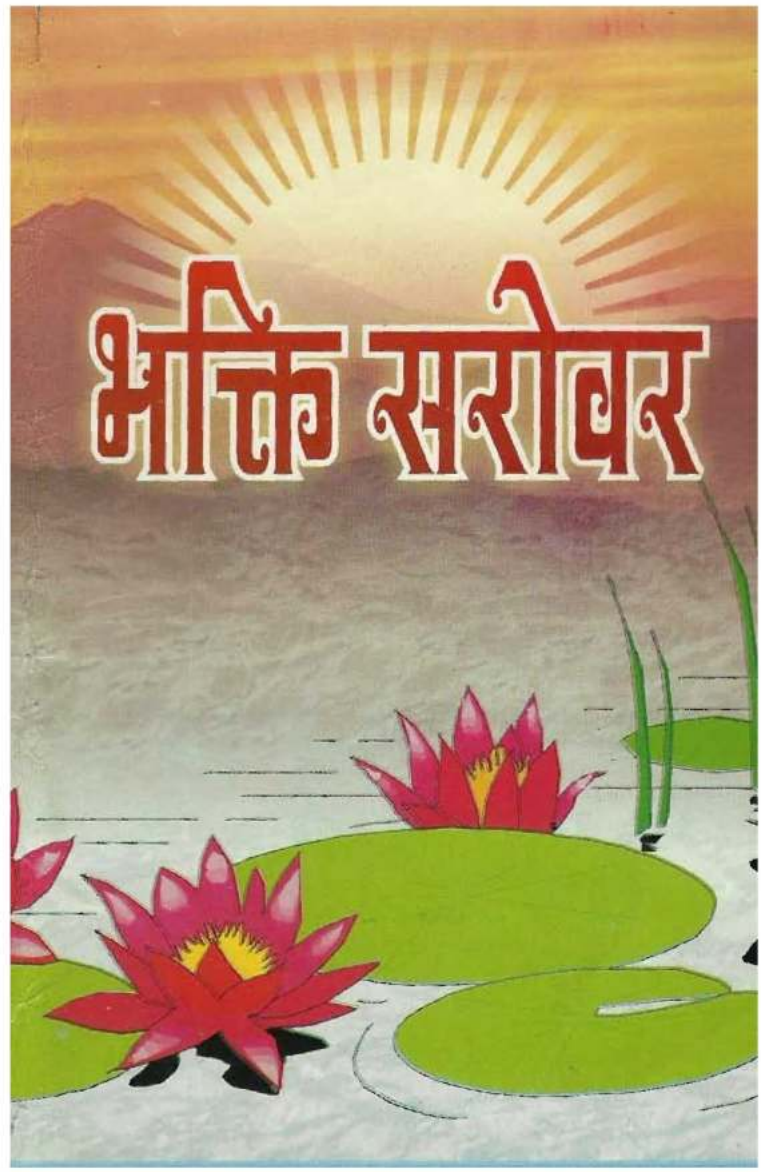
भक्ति सरोवर

भक्ति सरोवर

संकलन एवं सम्पादन :

पण्डित अभयकुमार जैन

शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य, एम.काम.

प्रकाशक :

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन: (0141) 2707458, 2705581

प्रथम तेरह संस्करण	:	58 हजार 200
(26 दिसम्बर, 1990 से अद्यतन)		
चौदहवाँ संस्करण	:	5 हजार
(1 मार्च 2003)		
कुल योग	:	63 हजार 200

मूल्य : **पाँच रुपये**

मुद्रक :
प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड
बाईस गोदाम, जयपुर

प्रकाशकीय

दिगम्बर जैन समाज में पंचकल्याणक महोत्सव, वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव, पूजन-विधान, तीर्थयात्रा, महावीर जयन्ती, श्रुतपंचमी आदि विभिन्न धार्मिक प्रसंगों में जिनेन्द्र भक्ति गीत गाने की परम्परा निरन्तर विकसित होती जा रही है।

विशिष्ट अवसरों पर निकाले जाने वाले जुलूस आदि में भजन मण्डलियों द्वारा अनेक प्रकार के भजन व गीत गाए जाते हैं। आमतौर पर देखा गया है कि वे गीत न तो प्रसंगानुकूल होते हैं और न ही बोधगम्य। परिणामत: नीरस गीतों से जनसमुदाय को उचित रस परिपाक नहीं हो पाता।

उक्त कमी के निराकरण हेतु हमारे सहयोगी विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने सरल व सरस बोधगम्य गीतों का संकलन कर उन्हें भक्ति सरोवर के रूप में प्रस्तुत किया है। इन गीतों में जिनेन्द्र-भक्ति-रसपान तो होता ही है, साथ ही आत्महित में कारणभूत जैनदर्शन के मूल सिद्धान्तों का दिग्दर्शन भी होता है।

प्रस्तुत संकलन में अनेक गीत तो उनके स्वयं के द्वारा लिखे गए हैं तथा शेष गीतों का सम्पादन कर उन्हें व्यवस्थित करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आप सभी इन गीतों का रसास्वादन कर भक्ति, अध्यात्म और सिद्धांत की त्रिवेणी में स्नान कर कर्म-मल का प्रक्षालन करें, इसी भावना के साथ। —*ब्र. जतीशचन्द शास्त्री*

अनुक्रमणिका

शास्त्र भक्ति खण्ड ०१-२७

१. मंत्र जपो नवकार.....२
२. रोम रोम से निकले.....३
३. पंच परम परमेष्ठी.....४
४. भावे भजो भावे भजो.....५
५. रोम रोम पुलकित.....६
६. भविक तुम वन्दहु.....७
७. आज हम जिनराज.....७
८. निरखी–निरखी मन.....८
९. मेरे मन मन्दिर में.....८
१०. चाह मुझे है दर्शन.....९
११. निरखो अंग अंग.....१०
१२. मंगलमय जिनराज.....११
१३. भक्ति के उठे सरगम....११
१४. दिन–रात स्वामी.....१२
१५. कोई इत आओजी.....१३
१६. श्री अरहंत छवि.....१३
१७. देखो जी आदीश्वर.....१४
१८. तुम्हारे दर्श बिन १५
१९. तिहारे ध्यान की.....१५
२०. हे जिन तेरो सुजस.....१६
२१. मैं महापुण्य उदय से...१७
२२. पार लगा–पार लगा....१७
२३. आये आये रे जिनंदा...१८
२४. आओ जिनमन्दिर में....१९
२५. दरबार तुम्हारा.....२०
२६. अशरीरी–सिद्ध २०
२७. प्रभु हम सब का.....२१
२८. थाकी उत्तम क्षमा पै....२२
२९. नाथ तुम्हारी पूजा में...२२
३०. एक तुम्ही आधार.....२३
३१. जिनवर चरणभक्ति.....२४
३२. निरखत जिनचन्द्र.....२५
३३. प्रभु पै वरदान.....२५
३४. श्री जिनवर पद.....२६
३५. बन्दों अद्‌भुत चन्द्र.....२७
❑ ऊंचे–ऊंचे शिखरों.....२७

शास्त्र भक्ति खण्ड २८-४१

३६. महिमा है अगम.....२८
३७. सांची तो गंगा.....२८
३८. जिन बैन सुनत.....२९
३९. चरणों मे आ पड़ा.....२९
४०. केवलिकन्ये वाङ्मय.....३०
४१. धन्य धन्य जिनवाणी.....३१
४२. धन्य धन्य वीतराग.....३२
४३. सुनकर वाणी.....३२
४४. मुख ओंकार धुनि.....३३
४५. वे प्राणी सुज्ञानी.....३५

४६. भ्रात जिनवाणी.....३५
४७. जिनवाणी सुन लो.....३६
४८. हे जिनवाणी माता.....३७
४९. धन्य–धन्य है घड़ी.....३७
५०. जिनवाणी माता दर्शन.....३८
५१. जिनवाणी माता.....३८
५२. नित पीज्यो.....३९
५३. शान्ति सुधा बरसाये....४०
५४. वीर–हिमाचल तैं.....४१

गुरु भक्ति खण्ड ४२-५१

५५. श्री मुनि राजत.....४२
५६. म्हारा परम दिगम्बर.....४३
५७. परम गुरु बरसत.....४३
५८. मैं परम दिगम्बर.....४४
५९. धन धन जैनी साधु.....४४
६०. ऐसे साधु सुगुरु.....४५
६१. ऐसे मुनिवर देखे.....४५
६२. वे मुनिवर कब.....४६
६३. परम दिगम्बर.....४६
६४. धन्य मुनीश्वर आतम...४७
६५. नित उठ ध्याऊं.....४८
६६. हे परम दिगम्बर यती..४९
६७. है परम दिगम्बर.....५०
६८. होली खेलें मुनिराज....५१

रथयात्रा गीत खण्ड ५२-५८

६९. धन्य धन्य आज.....५२
७०. अपना ही रंग मोहे ५३
७१. रंग मा रंग मा.....५३
७२. वीर प्रभु के ये बोल....५४
७३. करले आतम ज्ञान.....५५
७४. गा रे भैया, गा.....५६
७५. जय जिन शासन.....५७
❐ हे प्रभो! चरणों में.....५८

अध्यात्म-वैराग्य गीत खण्ड ५९ से ७९

७६. ये शाश्वत सुख का.....५९
७७. आत्मा हूँ, आत्मा हूँ.....५९
७८. जैन धर्म है हमको.....६०
७९. ज्ञाता दृष्टा राही हूँ.....६१
८०. करलो आतम ज्ञान.....६१
८१. संत साधु बनके.....६२
८२. वीर प्रभु का है.....६३
८३. चन्द क्षण जीवन.....६३
८४. सुन रे जिया.....६५
८५. जिया कब तक.....६६
८६. मोहे भावे न भैया.....६७
८७. ओ जाग रे चेतन.....६७
८८. जब तेरी डोली.....६८

८६. सोते सोते में नि.....६६
६०. सजधज के.....६६
६१. देख तेरी पर्याय.....७०
❐ आयो आयो रे.....७१
❐ आओ रे आओ रे.....७१

प्रासंगिक गीत खण्ड ७२-६१

६२. प्रतिष्ठा महोत्सव.....७२
६३. लहर लहर.....७३
६४. गर्भ–कल्याणक.....७४
६५. जयपुर शहर में.....७५
६६. सुनोजी, माँ ने देखे.....७६
६७. सोल सोल सपने.....७७
६८. बधाई आज मिले.....७८
६६. आया पंचकल्याणक.....७६
१००. चल म्हारा भायला.....७६
१०१. शिखर पे कलश.....८०
१०२. जीयरा....जीयरा.....८१
१०३ करलो इन्द्रध्वज.....८२
१०४. धन्य–धन्य दिन.....८२
१०५. अमृत से गगरी.....८३
१०६. इन्द्रध्वज मंडल.....८४
१०७. तू जाग रे चेतन.....८४
१०८. गगन मंण्डल में.....८५
१०६. भावना रथ पर.....८६
११०. करलो जिनवर.....८७
१११. श्री नेमीकुंवर.....८८
११२. जन–जन को.....८८
११३. रोम–रोम में.....८६
११४. आया पंचकल्याणक...६०

जैन ध्वज गीत

मंगलमय मंगलकारी जिन-शासन ध्वज लहराता।
अनेकान्तमय वस्तु व्यवस्था, का यह बोध कराता।
स्यादवाद शैली से जग का, संशय तिमिर मिटाता।
चहुँगति दुःख नशाता, जन-गण-मन हरषाता।।
जिन शासन सुखदाता

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरणमय मुक्ति मार्ग दरशाता।
जय हे....जय हे....जय हे....जय जय जय जय हे।।
शासन ध्वज लहराता।।

मंगलाचरण

श्री अरहंत सदा मंगलमय मुक्तिमार्ग का करें प्रकाश,
मंगलमय श्री सिद्धप्रभू जो, निजस्वरूप में करें विलास।
शुद्धातम के मंगल साधक साधु पुरुष की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब मंगलमय मंगलाचरण हो।।

मंगलमय चैतन्यस्वरों में परिणति की मंगलमय लय हो,
पुण्य-पाप की दुखमय ज्वाला, निज आश्रय से त्वरित विलयहो।
देव-शास्त्र-गुरु को वन्दन कर, मुक्ति वधु का त्वरित वरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब मंगलमय मंगलाचरण हो।।

मंगलमय पाँचों कल्याणक मंगलमय जिनका जीवन है,
मंगलमय वाणी सुखकारी शाश्वत सुख की भव्य सदन है।
मंगलमय सत्धर्म तीर्थ-कर्ता की मुझको सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब मंगलमय मंगलाचरण हो।।

सम्यग्दर्शनज्ञान-चरणमय मुक्तिमार्ग मंगलदायक है,
सर्व पाप मल का क्षय करके शाश्वत सुख का उत्पादक है।
मंगल गुण-पर्यायमयी चैतन्यराज की सदा शरण हो,
धन्य घड़ी वह धन्य दिवस जब मंगलमय मंगलाचरण हो।।

देव भक्ति खण्ड

१

मंत्र जपो नवकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार।
पंचप्रभु को वन्दन करलो परमेष्ठी सुखकार।।टेक।।

अरहंतों का दर्शन करके, शुद्धातम का परिचय करलो।
शिव सुख साधनहार मनुवा, मंत्र जपो नवकार।।१।।

सब सिद्धों का ध्यान लगालो, सिद्ध समान स्वयं को ध्यालो।
मंगलमय सुखकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार।।२।।

आचार्यों को शीश नवाओ, निर्ग्रन्थों का पथ अपनाओ।
मुक्ति मार्ग आराध मनुवा, मंत्र जपो नवकार।।३।।

उपाध्याय से शिक्षा लेकर, द्वादशांग को शीश नवाकर।
जिनवाणी उर धार मनुवा, मंत्र जपो नवकार।।४।।

सर्व साधु को वंदन करलो, रत्नत्रय आराधन करलो।
जन्म मरण क्षयकार मनुवा, मंत्र जपो नवकार।।५।।

२

रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ ! नाम तुम्हारा।
ऐसी भक्ति करूं प्रभुजी पाऊँ न जन्म दुबारा ।।टेक।।

जिनमन्दिर में आया, जिनवर दर्शन पाया।
अन्तर्मुख मुद्रा को देखा, आतम दर्शन पाया।।
जनम-जनम तक न भूलूंगा, यह उपकार तुम्हारा।।१।।

अरहंतों को जाना, आतम को पहिचाना।
द्रव्य और गुण-पर्यायों से, जिन सम निज को माना।।
भेदज्ञान ही महामंत्र है, मोह तिमिर क्षयकारा।।२।।

पंच महाव्रत धारूँ, समिति गुप्ति अपनाऊँ।
निर्ग्रन्थों के पथ पर चलकर, मोक्ष महल में आऊँ।।
पुण्य-पाप की बन्ध श्रृंखला नष्ट करूं दुखकारा।।३।।

देव-शास्त्र-गुरु मेरे, हैं सच्चे हितकारी।
सहज शुद्ध चैतन्यराज की महिमा, जग से न्यारी।।
भेदज्ञान बिन नहीं मिलेगा, भव का कभी किनारा।
रोम-रोम से निकले प्रभुवर नाम तुम्हारा, हाँ! नाम तुम्हारा।

३

पंच परम परमेष्ठी देखे.....।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।
हो.....सम्यग्दर्शन होता है ।टेक।।

दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य स्वरूपी, गुण अनन्त के धारी हैं।
जग को मुक्ति मार्ग बताते, निज चैतन्य विहारी हैं।
मोक्षमार्ग के नेता देखे, विश्व तत्त्व के ज्ञाता देखे ।।हृदय०।।

द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित जो, सिद्धालय के वासी है
आतम को प्रतिबिम्बित करते, अजर-अमर अविनाशी हैं।
शाश्वत सुख के भोगी देखे, योगरहित निजयोगी देखे ।।हृदय०।।

साधु संघ के अनुशासक जो धर्मतीर्थ के नायक हैं।
निज-पर के हितकारी गुरुवर देव धर्म परिचायक है।
गुण छत्तीस सुपालक देखे, मुक्तिमार्ग संचालक देखे ।।हृदय०।।

जिनवाणी को हृदयंगम कर शुद्धातम रस पीते हैं।
द्वादशांग के धारी मुनिवर ज्ञानानन्द में जीते हैं।।
द्रव्य-भाव श्रुतधारी देखे बीस-पाँच गुण धारी देखे ।।हृदय०।।

निज स्वभाव साधनरत साधू, परम दिगम्बर वनवासी।
सहज शुद्ध चैतन्यराजमय निज परिणति के अभिलाषी।।
चलते-फिरते सिद्धप्रभु देखे, बीस-आठ गुणमय विभु देखे।
हृदय हर्षित होता है, आनन्द उल्लसित होता है।।५।।

४

भावे भजो भावे भजो जिनराया ।
चौबिस जिनवर पाया जी पाया ।टेक॥

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन,
सुमति पद्म सुपार्श्व पद वन्दन।
आतम में अपनापन करके मिथ्यातम को दूर भगाया॥
जिनवर भजूँ आतम लखूँ, जिनराया। चौबीस जिनवर...॥१॥

चन्द्र पहुप शीतल श्रेयांस जिन,
वासुपूज्य अरहंत महा जिन।
वीतराग परिणति प्रगटाकर निर्ग्रन्थों का पथ अपनाया॥
समकित लहूँ चारित्र लहूँ, जिनराया। चौबिस जिनवर....॥२॥

विमल अनन्त धर्म जस उज्जवल
शान्ति कुन्थु अर मल्लि सुनिर्मल।
शुक्लध्यान की श्रेणी चढ़कर क्षण में केवलज्ञान उपाया॥
आनन्द लहूँ, कैवल्य लहूँ जिनराया। चौबिस जिनवर....॥३॥

मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु।
वर्धमान जिनराज महाविभु।
स्याद्वादमय दिव्यध्वनि से, जग को मुक्ति मार्ग बताया॥
ऐसा बनूं तुम जैसा बनूं जिनराया। चौबिस जिनवर....॥४॥

५

रोम-रोम पुलकित हो जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।
ज्ञानानन्द कलियाँ खिल जाँय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।

जिनमंदिर में श्री जिनराज, तनमंदिर में चेतनराज।
तन-चेतन को भिन्न पिछान, जीवन सफल हुआ है आज ।।टेक।।

वीतराग सर्वज्ञ देव प्रभु, आये हम तेरे दरबार।
तेरे दर्शन से निज दर्शन, पाकर होवें भव से पार।।
मोह-महातम तुरत विलाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।१।।

दर्शन-ज्ञान अनन्त प्रभु का, बल अनन्त आनन्द अपार।
गुण अनन्त से शोभित हैं प्रभु, महिमा जग में अपरम्पार।।
शुद्धातम की महिमा आय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।२।।

लोकालोक झलकते जिसमें, ऐसा प्रभु का केवलज्ञान।
लीन रहें निज शुद्धातम में, प्रतिक्षण हो आनन्द महान।।
ज्ञायक पर दृष्टी जम जाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।३।।

प्रभु की अन्तर्मुख-मुद्रा लखि, परिणति में प्रगटे समभाव।
क्षणभर में हों प्राप्त विलय को, पर-आश्रित सम्पूर्ण विभाव।।
रत्नत्रय-निधियाँ प्रगटाय, जब जिनवर के दर्शन पाय।।४।।

६

भविक तुम वन्दहु मनधरभाव, जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए।
जाके दरस परम पद प्रापति, अरु अनन्त शिवसुख लहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥१॥
निज स्वभाव निर्मल है निरखत, करम सकल अरि घट दहिए।
सिद्ध समान प्रगट इह थानक, निरख-निरख छवि उर गहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥२॥
अष्टकर्म-दल भंज प्रगट भई चिन्मूरति मनु बन रहिए।
इह स्वभाव अपनौ पद निरखहु जो अजरामर पद चहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥३॥
त्रिभुवन मांहि अकृत्रिम-कृत्रिम, वंदन नित-प्रति निरवहिए।
महा पुण्य संयोग मिलत है, भैया जिनप्रतिमा सरदहिए॥
जिनप्रतिमा जिनवरसी कहिए॥४॥

७

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये, हाँ जी हाँ! हम आये आये।
पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये॥टेक॥

जन्म-मरण नित करते करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये॥१॥

भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये॥२॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
पंकज की प्रभु यही वीनती, चरण-शरण मिल जाये॥३॥

८

निरखी-निरखी मनहर मूरति, तोरी हो जिनंदा।
खोई-खोई आतम निज निधि, पाई हो जिनंदा।टेक॥

मोह दु:ख का घर है मैंने, आज सरासर देखा है, आज..।
आतम-धन के आगे झूठा, जग का सारा लेखा है, जग....॥
मैं अपने में घुल-मिल जाऊँ, तो पाऊँ जिनंदा॥१॥

तू भवनाशी मैं भववासी, भवसागर से तिरना है, भवसागर....।
शुद्धस्वरूपी तुझ-सा बनकर, शिवरमणी को वरना है, शिव..॥
मैं अपने में ही रम जाऊँ वर पाऊँ जिनंदा॥२॥

नादानी में अब लों मैंने, पर को अपना माना है, पर को...।
काया की माया में भूला, तुझको नहिं पहिचाना है, तुझको...॥
अब भूलों पर रोता ये मन मोरा हो जिनंदा॥३॥

९

मेरे मन मन्दिर में आन, पधारो महावीर भगवान ।टेक॥

भगवन तुम आनन्द सरोवर रूप तुम्हारा महा-मनोहर।
निश-दिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान॥१॥

सुर-किन्नर-गणधर गुण गाते, योगी तेरा ध्यान लगाते।
गाते सब तेरा यश-गान, पधारो महावीर भगवान।।२।।

जो तेरी शरणागत आया, तूने उसको पार लगाया।
तुम हो दया-निधि भगवान, पधारो महावीर भगवान।।३।।

भक्त जनों के कष्ट निवारें, आप तरें हमको भी तारें।
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान।।४।।

आये हैं हम शरण तिहारी, पूजा हो स्वीकार हमारी।
तुम हो करुणा दया निधान, पधारो महावीर भगवान।।५।।

रोम-रोम में तेज तुम्हारा, भू-मण्डल तुमसे उजियारा।
रवि-शशि तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान।।६।।

१०

चाह मुझे है दर्शन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की।।टेक।।

वीतराग-छवि प्यारी है, जग जन को मनहारी है।
मूरत मेरे भगवन् की, वीर के चरण स्पर्शन की।।१।।

कुछ भी नहि श्रृंगार किये, हाथ नहीं हथियार लिये।
फौज भगाई कर्मन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की।।२।।

समता पाठ पढ़ाती है, ध्यान की याद दिलाती है।
नासादृष्टि लखो इनकी, प्रभु के चरण स्पर्शन की।।३।।

हाथ पै हाथ धरे ऐसे, करना कछु न रहा जैसे।
देख दशा पद्मासन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥४॥

जो शिव आनन्द चाहो तुम, इनसा ध्यान लगाओ तुम।
विपत हरै भव भटकन की, प्रभु के चरण स्पर्शन की॥५॥

११

निरखो अंग-अंग जिनवर के, जिनसे झलके शांति अपार ।टेक।।

चरण-कमल जिनवर कहें, घूमा सब संसार।
पर क्षणभंगुर जगत में, निज आत्मतत्त्व ही सार।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥१॥

हस्त-युगल जिनवर कहें,पर का करता होय।
ऐसी मिथ्या बुद्धि से ही, भ्रमण-चतुर्गति होय।
यातें पद्मासन विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥२॥

लोचन-द्वय जिनवर कहें, देखा सब संसार।
पर दुःखमय गति-चार में, ध्रुव आत्मतत्त्व ही सार।
यातें नासादृष्टि विराजे जिनवर, झलके शांति अपार॥३॥

अन्तर्मुख मुद्रा अहो, आत्मतत्त्व दरसाय।
जिन-दर्शन कर निज-दर्शन पा सत्-गरु वचन सुहाय।
यातें अन्तर्दृष्टि विराजे जिनवर झलके शांति अपार॥४॥

१२

मंगलमय जिनराज तुम्हारे, निश-दिन शरणे आये।
भक्ति-भाव की सरगम गाकर, चरणे शीश झुकाये।टेक।।

भाव-सुमन की सुर-सौरभ हो, गाती निश-दिन प्रभु गौरव को।
अमृत देती प्रभु-भक्तों को, भव सागर तिर जाये।।१।।

भाव-किरण की ज्योति जलाई, भक्ति-स्वरों में आरती गाई।
अखियाँ दर्शन को ललचाई, जन्म सफल कर जाये।।२।।

नव लय नव संगीत सुनाये, शांत-स्वरों में बीन बजाये।
नवरस भक्ति तान सुनावो, निश दिन प्रभु-गुण गाये।।३।।

१३

भक्ति के उठे सरगम, मैं गाऊँ तेरे गुण,
मेरे दिल में लगन, आये दरस मिलन,
प्रभु चरणों में मन है मगन।।टेक।।

बीच भंवर में नाव हमारी पार करो तुम केवल ज्ञानी।
मैं आऊं प्रभु-चरणन में, मेरे मन में उठी है उमंग।।

नर-नारी मिल मंगल गायें, भक्ति के नवदीप जलायें।
सात सुरों की अंजलि गावें, भव-भव के सब कर्म छुड़ावें।।

मन मन्दिर में आप विराजो, अन्तर में प्रभु ज्ञान जगा दो।
भव-भव के सब कर्म छुड़ादो, विनती प्रभुजी मेरी सुन लें।।

१४

दिन-रात स्वामी तेरे गीत गाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ।टेक।।

तेरी शांत-मूरत मुझे भा गई है।
मेरे नयनों में नजर आ गई है।
मैं अपने में अपने को कैसे समाऊं,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ।।१।।

मैं सारे जहाँ में कहीं सुख न पाया।
है गम का भरा गहरा दरिया है छाया।
ये जीवन की नैया मैं कैसे तिराऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ।।२।।

निगोद अवस्था से मानव गति तक।
तुझे लाख ढूंड़ा न पाया मैं अब तक।
कहाँ मेरी मन्जिल तुझे कैसे पाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ।।३।।

यही आस जिनवर-शरण पाऊँ तेरी,
मिट जाये मेरी ये भव-भव की फेरी।
शरण दो, तुम्हें नाथ शीश नवाऊँ,
भावों की कलियाँ चरणे खिलाऊँ।।४।।

१५

कोई इत आओ जी, वीतराग ध्याओ जी।
जिनगुण की आरती, संजोय लाओ जी।।टेक।।

दया का हो दीपक, क्षमा की हो ज्योत।
तेल सत्य संयम में ज्ञान का उद्योत।
मोह तम नशाओ जी, वीतराग ध्याओ जी।।१।।

संयम की आरती में समकित सुगंध।
दर्श ज्ञान चारित्र की हृदय में उमंग।
भेद-ज्ञान पाओजी, वीतराग ध्याओ जी।।२।।

नर-तन को पाय कर भूलियो मती।
बन जा दिगम्बर महाव्रत यती।
भावना ये भावो जी, वीतराग ध्याओ जी।।३।।

जिनगुण की आरती में ध्यान की कला।
भव-भव के लागे सब कर्म लो गला।
भवभ्रमण मिटाओ जी, वीतराग ध्याओ जी।।४।।

१६

श्री अरहंत छवि लखि हिरदै, आनन्द अनुपम छाया है ।टेक।।

वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है।
दृष्टि नासिका अग्रधार मनु ध्यान महान बढ़ाया है।।१।।

रूप सुधाकर अंजलि भर भर, पीवत अति सुख पाया है।
तारन-तरन जगत हितकारी, विरद सची पति गाया है।।२।।

तुम मुख-चन्द्र नयन के मारग, हिरदै मांहि समाया है।
भ्रमतम दुःख आताप नस्यो सब, सुख सागर बढ़ि आया है।।३।।

प्रगटी उर सन्तोष चन्द्रिका निज स्वरूप दर्शाया है।
धन्य-धन्य तुम छवि जिनेश्वर, देखत ही सुख पाया है।।४।।

१७

देखो जी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है।टेक।।

जगत विभूति भूति सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आशा वासा, नासा-दृष्टि सुहाया है।।१।।

कंचन वरन चले नन रंच न सुर-गिरि ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि, जाति विरोध नसाया है।।२।।

शुध-उपयोग हुताशन में जिन, वसुविधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलकावलि सिर सोहे, मानो धुआं उड़ाया है।।३।।

जीवन-मरन अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके, दौल तास जस गाया है।।४।।

१८

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहिं चैन पड़ती है।
छवी वैरागमय तेरी मेरी आखों में फिरती है।टेक।।

निराभूषण विगत दूषण परम आसन मधुर भाषण।
नजर नैनों की आशा की अनी पर से गुजरती है।१।।

नहीं कर्मों का डर हमको, कि जब लग ध्यान चरणन में।
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है।।२।।

मिले गर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इसमें।
तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है।।३।।

हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखी।
शान्ति मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है।।४।।

जगत सिरताज हो जिनराज सेवक को दरश दीजे।
तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है।।५।।

१९

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती है।
विषय की वासना तज कर निजातम लौ लगाती है।टेक।।

तेरे दर्शन से हे स्वामी, लखा है रूप मैं मेरा।
तजूं कब राग तन-धन का ये सब मेरे विजाती हैं।१।।

जगत के देव सब देखे, कोई रागी कोई द्वेषी।
किसी के हाथ आयुध है किसी को नार भाती है।।२।।

जगत के देव हठ ग्राही, कुनय के पक्षपाती हैं।
तू ही सुनय का है वेत्ता, वचन तेरे अघाती है।।३।।

मुझे कुछ चाह नहीं जग की यही है चाह स्वामी जी।
जपूं तुम नाम की माला जो मेरे काम आती है।।४।।

तुम्हारी छवि निरख स्वामी निजातम लौ लगी मेरे।
यही लौ पार कर देगी जो भक्तों को सुहाती है।।५।।

२०

हे जिन तेरो सुजस उजागर, गावत है मुनिजन ज्ञानी।।टेक।।

दुर्जय मोह महाभट जाने, निज वस कीने जग प्रानी।
सो तुम ध्यान कृपान पान गहि, तत् छिन ताकी थिति हानी।।१।।

सुप्त अनादि अविद्या निद्रा जिन जन निज सुधि बिसरानी।
है सचेत तिन निज निधि पाई श्रवण सुनी जब तुम वानी।।२।।

मंगलमय तू जग में उत्तम, तू ही शरण शिव मग दानी।
तुम पद सेवा परम औषधि जन्म जरामृत गद हानी।।३।।

तुमरे पंचकल्याणक मांही त्रिभुवन मोद दशा ठानी।
विष्णु दिगम्बर जिष्णु दिगम्बर बुध शिव कहि ध्यावत ध्यानी।।४।।

सर्व दर्व गुण परिजय परिणति, तुम सुबोध में नहिं छानी।
तातें 'दौल' दास उर आशा, प्रगट करी निज रस सानी॥५॥

२१

मैं महापुण्य उदय से जिनधर्म पा गया ।टेक॥

चार घाति कर्म नाशे ऐसे अरहंत हैं।
अनन्त चतुष्टय धारी श्री भगवन्त है॥
मैं अरहंतदेव की शरण आ गया ॥१॥

अष्टकर्म नाश किये ऐसे सिद्धदेव हैं।
अष्टगुण प्रगट जिनके हुए स्वयमेव है॥
मैं ऐसे सिद्धदेव की शरण आ गया ॥२॥

वस्तु का स्वरूप बतावे वीतराग-वाणी है।
तीन लोक के जीव हेतु महाकल्याणी है॥
मैं जिनवाणी मां की शरण में आ गया ॥३॥

परिग्रह रहित दिगम्बर मुनिराज हैं।
ज्ञान ध्यान सिवा नहीं दूजा कोई काज है॥
मैं श्री मुनिराज की शरण पा गया ॥४॥

२२

पार लगा पार लगा पार लगाना, नाथ मेरी नाव फंसी पार लगाना।
हो.....तुम सम और ना मांझी, ओ स्वामी जी ।टेक॥

चार गति का गहन सरोवर, चौरासी लख लहर-लहर पर।
डगमग डोले नैया, ओ स्वामी जी।।१।।
विषय-कषाय मगर मुह फाड़े, घूम रहे चहुँ विषधर काले।
पाप भंवर है भारी, ओ स्वामी जी।।२।।
सम्यक्-रत्नत्रय को पाकर, सुखी हुए हो मोक्ष में जाकर।
हम भी समकित पायें, ओ स्वामी जी।३।।
कर्म काट तुम सम पद पाऊँ, जीवन में सौभाग्य ये पाऊँ।।
लहूँ मोक्ष सुखकार, ओ स्वामी जी।।४।।

२३

आये आये रे जिनंदा, आये रे जिनंदा, तोरी शरण में आये।
कैसे पावें .....हो कैसे पावें, तुम्हारे गुण गावें रे।।
मोह में मारे-मारे, भव-भव में गोते खाये।
तोरी शरण में आये, हो.....आये आये रे जिनंदा।टेक।।

जग झूठे से प्रीत लगाई, पाप किये मन माने।
सदगुरु वाणी कभी न मानी, लागे भ्रम रोग सुहाने।।१।।

आज मूल की भूल मिटी है, तव दर्शन कर स्वामी।
तत्त्व चराचर लगे झलकने, घट-घट अन्तरयामी।।२।।

जन्म-मरण रहित पद पावन, तुम-सा नाथ सुहाया।
वो सौभाग्य मिले अब सत्वर, मोक्ष-महल मन भाया।।३।।

२४

आओ जिनमन्दिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ।
जिनशासन की महिमा गाओ,
आया आया रे अवसर आनन्द का।टेक।।

हे जिनवर तव शरण में, सेवक आयो आज।
शिवपुर-पथ दरशाय के, दीजे निज पद राज।।
प्रभु अब शुद्धातम बतलाओ चहुँगति दुख से शीघ्र छुड़ाओ।
दिव्यध्वनि अमृत बरसाओ,
आया प्यासा मै सेवक- आनन्द का।।१।।

जिनवर दर्शन कीजिए, आतम दर्शन होय।
मोह-महातम नाशि के, भ्रमण चतुर्गति खोय।।
शुद्धातम को लक्ष्य बनाओ, निर्मल भेदज्ञान प्रगटाओ।
अब विषयों से चित्त हटाओ,
पाओ पाओ रे मारग निर्वाण का।।२।।

चिदानंद चैतन्यमय, शुद्धातम को जान।
निज स्वरूप में लीन हो पाओ केवलज्ञान।।
नव केवललब्धि प्रगटाओ, फिर योगों को नष्ट कराओ
अविनाशी सिद्धपद को पाओ,
आया आया रे अवसर आनन्द का।।३।।

आओ जिनमन्दिर में आओ, श्री जिनवर के दर्शन पाओ।।

२५

दरबार तुम्हारा मनहर है,
प्रभु दर्शन कर हर्षाये हैं, दरबार तुम्हारे आए हैं ।।टेक।।

भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्ति भी होगी चाह हमारी।
भाव रहे नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं।।
दरबार तुम्हारे आए हैं ।।१।।
जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा।
शरणे जो भी आये हैं, निज आतम को लख पाये हैं।।
दरबार तुम्हारे आए हैं ।।२।।
विनय यही है प्रभु हमारी, आतम की महके फुलवारी।
अनुगामी हो तुम पद पावन 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं।।
दरबार तुम्हारे आए हैं ।।३।।

२६

अशरीरी-सिद्ध भगवान, आदर्श तुम्हीं मेरे।
अविरुद्ध शुद्ध चिद्घन उत्कर्ष तुम्ही मेरे।।टेक।।

सम्यक्त्व सुदर्शन ज्ञान अगुरुलघु अवगाहन।
सूक्ष्मत्व वीर्य गुणखान, निर्बाधित सुखवेदन।।
हे गुण अनन्त के धाम, वन्दन अगणित मेरे।।१।।

रागादि रहित निर्मल, जन्मादि रहित अविकल।
कुल गोत्र रहित निश्कुल, मायादि रहित निश्छल।।

रहते निज में निश्चल, निष्कर्म साध्य मेरे ।।२।।

रागादि रहित उपयोग, ज्ञायक प्रतिभासी हो।
स्वाश्रित शाश्वत-सुख भोग, शुद्धात्म-विलासी हो।।
हे स्वयं सिद्ध भगवान, तुम साध्य बनो मेरे ।।३।।

भविजन तुम सम निज-रूप ध्याकर तुम सम होते।
चैतन्य पिण्ड शिवभूप होकर सब दुःख खोते।।
चैतन्यराज सुखखान, दुख दूर करो मेरे ।।४।।

२७

प्रभु हम सब का एक, तू ही है तारण हारा रे।
तुम को भूला, फिरा वही नर मारा-मारा रे।।टेक।।

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, आज तुम्हारा दर्शन पाया।
फूला मन यह हुआ सफल मेरा जीवन सारा रे।।१।।

भक्ति में जब चित्त लगाया, चेतन में तब चित ललचाया।
वीतरागी देव करो अब भव से पारा रे।।२।।

अब तो मेरी ओर निहारो, भव समुद्र से नाव उबारो।।
पंकज का लो हाथ पकड़ मैं पाऊँ किनारा रे।।३।।

जीवन में मैं नाथ को पाऊँ, वीतरागी भाव बढ़ाऊँ।
भक्ति भाव से प्रभु चरण में जाऊँ-जाऊँ रे।।४।।
प्रभु हम सब का एक, तू ही है तारण हारा रे।।

२८

थांकी उत्तम क्षमा पै जी अचम्भो म्हानें आवे,
किस विधि कीने करम चकचूर ।।टेक।।
एक तो प्रभु तुम परम दिगम्बर, पास न तिल-तुष मात्र हुजूर।
दूजे जीव दया के सागर, तीजे सन्तोषी भरपूर।।१।।

चौथे प्रभु तुम हित उपदेशी तारण तरण जगत मशहूर।
कोमल वचन सरल सत्यवक्ता निर्लोभी संयम तप सूर।।२।।

कैसे ज्ञानावरणी नास्यौ, कैसे कर्यो अदर्शन चूर।
कैसे मोह-मल्ल तुम जीत्यो, कैसे किये घातिया दूर।।३।।

कैसे केवलज्ञान उपायो, अन्तराय कैसे निरमूल।
सुरनर मुनि सेवें चरण तुम्हारे, तो भी नहीं प्रभु तुमकू गरूर।।४।।

करत आश अरदास नैनसुख, दीजे यह मोहे दान जरूर।
जनम-जनम पद पंकज सेवूं और न चित कछु चाह हुजूर।।५।।

२९

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया।
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया।।टेक।।
पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा।
इन्द्र नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा।
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया।।१।।

जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा।
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत तप आदि स्वाहा।
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया।।२।।

अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा।।
पर लक्षी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा।।
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया।।३।।

तुम हो पूज्य, पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा।
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया।।४।।

३०

एक तुम्हीं आधार हो जग में, अय मेरे भगवान।
कि तुमसा और नहीं बलवान।।

सम्हल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान।
कि तुमसा और नही बलवान।।टेक।।

आया समय बड़ा सुखकारी, आतम बोध कला विस्तारी।
मैं चेतन तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी।।
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षय निधि महान।।१।।

दुनियाँ में एक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा।।
मैं शिव भूप रूप सुख कंदा ज्ञाता दृष्टा तुम सा बन्दा।।
मुझ कारज के कारण तुम हो और नहीं मतिमान।।२।।

सहज स्वभाव भाव दरशाऊं पर परिणति से चित्त हटाऊँ।
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ सिद्धसमान स्वयं बन जाऊँ।।
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है सौभाग्य प्रधान।।३।।

३१

जिनवर चरण भक्ति वर गंगा,
ताहि भजो भवि नित सुखदानी।
स्याद्वाद हिम गिरि तें उपजी,
मोक्ष महासागरहि समानी ।टेक।।

ज्ञान-विराग रूप दोऊ ढाये,
संयम भाव लहर हित आनी।
धर्मध्यान जहां भंवर परत हैं,
शम-दम जामें सम-रस पानी ।१।।

जिन-संस्तवन तरंग उठत है,
जहाँ नहीं भ्रम कीच निशानी।
मोह-महागिरि चूर करत है,
रत्नत्रय शुद्ध पंथ ढलानी।।२।।

सुर-नर-मुनि-खग आदिक पक्षी,
जहाँ रमत नित समरस ठानी।
'मानिक' चित्त निर्मलस्थान करी,
फिर नहीं होत मलिन भवि प्राणी।।३।।

३२

निरखत जिनचन्द्र-वदन स्व-पद सुरुचि आई।

प्रगटी निज-आन की पिछान ज्ञान-भान की।
कला उद्योत होत काम-जामनी पलाई।। निरखत.।।१।।

शाश्वत आनन्द स्वाद पायौ विनस्यो विषाद।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई।। निरखत.।।२।।

साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की।
उपाधि को विराधि कै आराधना सुहाई।। निरखत.।।३।।

धन दिन छिन आज सुगुनि चिंते जिनराज अबै।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई।। निरखत.।।४।।

३३

प्रभु पै यह वरदान सुपाऊँ फिर जग कीच बीच नहीं आऊँ।टेक।।

जल गंधाक्षत पुष्प सुमोदक, दीप धूप फल सुन्दर ल्याऊँ।
आनन्द जनक कनक भाजन धरि, अर्घ अनर्घ हेतु पद ध्याऊँ।।१।।

आगम के अभ्यास मांहि पुनि चित एकाग्र सदैव लगाऊँ।
संतनि की संगति तजि के मैं, अन्त कहूँ इक छिन नहीं जाऊँ।।२।।

दोष वाद में मौन रहूँ फिर, पुण्य पुरुष गुण निश दिन गाऊँ।
राग दोष सब ही को टारी, वीतराग निज भाव बढ़ाऊँ।।३।।

बाहिर दृष्टि खेंच के अन्दर, परमानन्द स्वरूप लखाऊँ।
'भागचन्द' शिव प्राप्त न जोलों तोलों तुम चरणांबुज ध्याऊँ।।४।।

३४

श्री जिनवर पद ध्यावे जे नर, श्री जिनवर पद ध्यावे है।टेक।।

तिनकी कर्म कालिमा विनशे, परम ब्रह्म हो जावे है।
उपल अग्नि संयोग पाय जिमि, कंचन विमल कहावे हैं।१।।

चन्द्रोज्ज्वल जस तिनको जग में, पण्डित जन नित गावें हैं।
जैसे कमल सुगन्ध दशों दिश, पवन सहज फैलावें है।।२।।

तिनहि मिलन को मुक्ति सुन्दरी, चित अभिलाषा लावे है।
कृषि में तृण जिमि सहज उपजियो, स्वर्गादिक सुख पावे है।।३।।
जनम जरा मृत दावानल ये, भाव सलिल तें बुझावे है।
''भागचंद'' कहा तांई वरने, तिनहि इन्द्र शिर नावे है।।४।।

३५

वन्दों अद्भुत चन्द्रवीर जिन, भविचकोर चित हारी।
चिदानन्द अंबुधि अब उछर्यो भव तप नाशन हारी।टेक।।

सिद्धारथ नृप कुल नभ मण्डल, खण्डन भ्रमतम भारी।
परमानन्द जलधि विस्तारन, पाप ताप छय कारी।१।।

उदित निरन्तर त्रिभुवन अन्तर, कीरत किरन पसारी।
दोष मलंक कलंक अखकि, मोह राहु निरवारी।।२।।

कर्मावरण पयोध अरोधित, बोधित शिव मग चारी।
गणधरादि मुनि उडुगन सेवत, नित पूनम थिति धारी।।३।।

अखिल अलोकाकाश उल्लंघन, जासु ज्ञान उजयारी।
''दौलत'' तनसा कुमुदिनि-मोदन, ज्यों चरम जगवारी।।४।।

ऊंचे ऊंचे शिखरों वाला रे, यह तीरथ हमारा।
तीरथ हमारा हमें लागे प्यारा।टेक।।

श्री जिनवर से भेंट करावें, जग को मुक्ति मार्ग दिखावें।।
मोह का नाश करावे रे, यह तीरथ हमारा।१।।

शुद्धातम से प्रीति लगावे, जड़-चेतन को भिन्न बतावे।।
भेद-विज्ञान करावे रे यह तीरथ हमारा।।२।।

शास्त्र भक्ति खण्ड

३६

महिमा है अगम जिनागम की ।टेक।।
जाहि सुनत जड़ भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतम की ।।१।।
रागादिक दुःख कारन जानैं, त्याग बुद्धि दीनी भ्रम की ।।२।।
ज्ञान-ज्योति जागी उर अन्तर, रुचि बाढ़ी पुनि शम-दम की ।।३।।
कर्मबंध की भई निरजरा, कारण परम पराक्रम की ।।४।।
'भागचन्द' शिवलालच लाग्यो, पहुँच नहीं है जहँ जम की ।।५।।

३७

सांची तो गंगा यह वीतराग वाणी।
अविच्छिन्न धारा निजधर्म की कहानी।।टेक।।

जामें अति ही विमल, अगाध ज्ञान पानी।
जहां नही संशयादि, पंक की निशानी।।१।।

सप्तभंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी।
संत चित मरालवृन्द, रमें नित्य ज्ञानी।।२।।

जाके अवगाहनतैं, शुद्ध होय प्रानी।
भागचन्द निहचै, घटमाहिं या प्रमानी।।३।।

३८

जिन बैन सुनत मोरी भूल भगी ।टेक।।
कर्मस्वभाव भाव चेतन को, भिन्न पिछानन सुमति जगी ।।१।।
निज-अनुभूति सहज ज्ञायकता, सो चिर रुष-तुष मैल पगी ।।२।।
स्याद्वाद धुनि निर्मल जल तें, विमल भई समभाव लगी ।।३।।
संशय-मोह भरमता विघटी, प्रगटी आतम सोंज सगी ।।४।।
दौल अपूरव मंगल पायो, शिवसुख लेन होंस उमगी ।।५।।

३९

चरणों मे आ पड़ा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।
मस्तक झुका रहा हूँ, हे द्वादशांग वाणी।टेक।।
मिथ्यात्व को नशाया, निज तत्त्व को प्रकाशा।
आपा-पराया भासा, हो भानु के समानी।।१।।
षट् द्रव्य को बताया, स्याद्वाद को जताया।
भवफन्द से छुड़ाया, सच्ची जिनेन्द्र वाणी।।२।।
रिपु चार मेरे मग में, जंजीर डाले पग में।
ठाड़े हैं मोक्ष में, तकरार मोसों ठानी।।३।।
दे ज्ञान मुझको माता, इस जग से तोड़ूँ नाता।
होवे सुदर्शन साता, नहिं जग में तेरी सानी।।४।।

४०

केवलिकन्ये, वाङ्मय गंगे, जगदम्बे, अघ नाश हमारे।
सत्य-स्वरूपे, मंगलरूपे, मन-मन्दिर में तिष्ठ हमारे।टेक॥

जम्बूस्वामी गौतम-गणधर, हुए सुधर्मा पुत्र तुम्हारे।
जगतैं स्वयं पार ह्वै करके, दे उपदेश बहुत जन तारे॥१॥

कुन्दकुन्द, अकलंकदेव अरु, विद्यानन्दि आदि मुनि सारे।
तव कुल-कुमुद चन्द्रमा ये शुभ, शिक्षामृत दे स्वर्ग सिधारे॥२॥

तूने उत्तम तत्त्व प्रकाशे, जग के भ्रम सब क्षय कर डारे।
तेरी ज्योति निरख लज्जावश,रवि-शशि छिपते नित्य विचारे॥३॥

भव-भय पीड़ित, व्यथित-चित्त जन जब जो आये शरण तिहारे।
छिन भर में उनके तब तुमने, करुणा करि संकट सब टारे॥४॥

जब तक विषय-कषाय नशें नहिं, कर्म-शत्रु नहिं जाय निवारे,
तब तक 'ज्ञानानन्द' रहै नित, सब जीवन में समता धारे॥५॥

४१

धन्य-धन्य जिनवाणी माता, शरण तुम्हारी आए।
परमागम का मन्थन करके, शिवपुर पथ पर धाए।
माता दर्शन तेरा रे! भविक को आनन्द देता है,
हमारी नैया खेता है ॥१॥

वस्तु कथंचित् नित्य-अनित्य, अनेकांतमय शोभे।
परद्रव्यों से भिन्न सर्वथा, स्वचतुष्टयमय शोभे।
ऐसी वस्तु समझने से, चतुर्गति फेरा कटता है,
जगत का फेरा मिटता है ॥२॥

नय निश्चय-व्यवहार निरूपण, मोक्षमार्ग का करती।
वीतरागता ही मुक्ति पथ, शुभ व्यवहार उचरती।
माता तेरी सेवा से, मुक्ति का मारग खुलता है,
महा मिथ्यातम धुलता है ॥३॥

तेरे अंचल में चेतन की, दिव्य चेतना पाते।
तेरी अमृत लोरी क्या है, अनुभव की बरसातें।
माता तेरी वर्षा मे, निजानन्द झरना झरता है,
अनुपमानन्द उछलता है ॥४॥

नव-तत्त्वों में छुपी हुई, जो ज्योति उसे बतलाती।
चिदानन्द चैतन्यराज का, दर्शन सदा कराती।
माता तेरे दर्शन से, निजातम दर्शन होता है,
सम्यग्दर्शन होता है॥५॥

४२

धन्य-धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।
चिदानंद की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी।।टेक।।

उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी।।१।।

नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद-अभेद।
अनेकांतरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी।।२।।

भाव शुभाशुभ बंधस्वरूप, शुद्ध चिदानंदमय मुक्तिरूप।
मारग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी।।३।।

चिदानंद चैतन्य आनन्द धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी।।४।।

४३

सुनकर वाणी जिनवर की,
म्हारे हर्ष हिये न समाय जी।।१।।
काल-अनादि की तपन बुझानी,
निज निधि मिली अथाह जी।।२।।
संशय भ्रम और विपर्यय नाशा,
सम्यक् बुधि उपजाय जी।।३।।
नर भव सफल भयो अब मेरो,
बुधजन भेंटत पाय जी।।४।।

मुख ओंकार धुनि सुनि अर्थ गणधर विचारै।
रचि आगम उपदिसे भविक जीव संशय निवारै॥

दोहा

सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन।
छंद भुजंगप्रयागतै अष्टक कहों बखान॥१॥

भुजंगप्रयात

जिनादेश जाता जिनेन्द्रा विख्याता,
विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता।
दुराचार-दुनै हरा शंकरानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥२॥

सुधाधर्मसंसाधनी धर्मशाला,
सुधातापनिर्नाशनी मेघमाला।
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥२॥

अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा,
कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा।
चिदानंद-भूपाल की राजधानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी॥३॥

समाधानरूपा अनूपा अक्षुद्रा,
अनेकान्तधा स्याद्वादाङ्कमुद्रा।
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी।।४।।

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा,
श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञानशोभा।
महापावनी भावना भव्यमानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी।।५।।

अतीता अजीता सदा निर्विकारा
विषैवाटिका खंडिनि खड्ग-धारा।
पुरापापविक्षेप कर्तृ कृपाणी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी।।६।।

अगाधा अबाधा निरंधा निराशा,
अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा।
निशंका निरंका चिदंका भवानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी।।७।।

अशोका मुदेका विवेका विधानी
जगज्जन्तुमित्रा विचित्रावसानी।
समस्तावलोका निरस्ता निदानी,
नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी।।८।।

उल्लाला

जे आगम रुचिधरैं, जे प्रतीति मन मांहि आनहि।
अवधारहिंगे पुरुष, समर्थ पद अर्थि आनहिं।।

दोहा

जे हित हेतु बनारसी, देहिं धर्म उपदेश।
ते सब पावहिं परम सुख, तज संसार कलेश।।

४५

वे प्राणी सुज्ञानी जिन जानी जिनवाणी ।टेक।।

चन्द्र सूर हू दूर करै नहिं, अन्तर तम की हानी ।।१।।
पक्ष सकल नय भक्ष करत है, स्याद्वाद में सानी ।।२।।
द्यानत तीन भवन मन्दिर में दीवट एक बखानी ।।३।।
पढ़े सुनें ध्यावें जिनवाणी, चरणन शीश नमामी ।।४।।

४६

भात जिनवाणी सम नहिं आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ।टेक।।

एकान्तों का नहीं ठिकाना, स्याद्वाद का लखा निशाना।
मिटता भव-भव का अज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान।१।।

केवलज्ञानी की यह वाणी, खिरे निरक्षर तदि समझानी।
सुरनर तिर्यंच सुनतें आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान।।२।।

गणधर हृदय विराजी माता, ज्ञानस्वभाव सहज झलकाता।
सुनत चिन्तत हो भेदविज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥३॥

भविजन प्रीतिसहित चितधारे, रवि शशि सम तम को परिहारे।
उर घट प्रगटे पूरने आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥४॥

मोक्ष दायिका है जिनमाता, तुम पूजक सम्यक निधिपाता।
नंद भी अपने आश्रित जान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान॥५॥

४७

जिनवाणी सुन लो रे भैया, जिनवाणी सुन लो रे ।टेक॥
अनन्त भव यूं ही खोये,
पर का बोझा ढोये।
तेरी कथा तुझको सुनावें-२ ।जिनवाणी सुन०॥१॥
पंचपरावर्तन दुःखड़े सुनाकर,
दुर्लभ नरभव का ज्ञान कराकर।
अब ना सुनी तो फिर कौन कहेगा-२ ।जिनवाणी सुन०॥२॥
सिद्ध स्वरूपी तू जग में है घूमे,
आनन्द सुखमय प्रभु खुद को है भूले।
जिनवाणी से अपना आतम पहचान ले-२ ।जिनवाणी०॥३॥
चिदानन्द ध्रुव का दर्शन कराकर,
वीतरागी सुख का अमृत पिलाकर।
जाग रे क्यों मोह-नींद में सोये-२ ।जिनवाणी सुन०॥४॥

४८

हे जिनवाणी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।
शिवसुखदानी माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।।

तू वस्तु स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे।
स्याद्वाद विख्याता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको कोटि प्रणाम।।

तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन।
हे तीन जगत की माता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको..... ।।

तू लोका-लोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे।
हे विश्व तत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम तुमको..... ।।

शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रगटावे।
निज आनन्द अमृत दाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको..... ।।

हे मात! कृपा अब कीजे परभाव सकल हर लीजे।
शिवराम सदा गुण गाता, तुमको लाखों प्रणाम, तुमको..... ।।

४९

धन्य-धन्य है घड़ी आजकीजिनधुनि श्रवणपरी।
तत्त्वप्रतीति भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी।टेक।।

जड़ तैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, पर में सब परिहरी।१।।

पाप-पुण्य विधि बन्ध-अवस्था, भासी अति-दुःखभरी।
वीतराग-विज्ञानभावमय, परनति अति विस्तरी॥२॥

चाह दाह विनसी, बरसी पुनि, समता मेघ झरी।
बाढ़ी प्रीति निराकुल पदसों, 'भागचन्द' हमरी॥३॥

५०

जिनवाणी माता दर्शन की बलिहारियाँ ।टेक॥

प्रथम देव अरहन्त मनाऊँ, गणधर जी को ध्याऊँ।
कुन्दकुन्द आचार्य हमारे, तिनको शीश नवाऊँ॥१॥

योनि लाख चौरासी मांही, घोर महादुःख पायो।
तेरी महिमा सुनकर माता, शरण तुम्हारी आयो॥२॥

जानै थाँको शरणा लीनों, अष्ट कर्म क्षय कीनो।
जनम-मरण मिटा के माता, मोक्ष महापद दीनों॥३॥

ठाड़े श्रावक अरज करत हैं, हे जिनवाणी माता।
द्वादशांग चौदह पूरव की, कर दो हमको ज्ञाता॥४॥

५१

जिनवाणी माता रत्नत्रय निधि दीजिये।।टेक॥

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चरण से, काल अनादि घूमे,
सम्यग्दर्शन भयौ न तातें, दुःख पायो दिन दूने॥१॥

है अभिलाषा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण दे माता।
हम पावैं निजस्वरूप आपनों, क्यों न बनै गुण ज्ञाता।।२।।

जीव अनन्तानन्त पठाये स्वर्ग मोक्ष में तूने।
अब बारी है हम जीवन की, होवे कर्म विदूने।।३।।

भव्य जीव हैं पुत्र तुम्हारे, चहुंगति दुःख से हारे।
इनको जिनवर बना शीघ्र अब, दे दे गुण गण सारे।।४।।

औगुण तो अनेक होत है, बालक में ही माता।
पैं अब तुमसी माता पाई, क्यों न बनें गुण ज्ञाता।।५।।

५२

नित पीज्यो धी धारी, जिनवाणी सुधा सम जानिके।टेक।.

वीर मुखारविंदतै प्रगटी, जन्म-जरा गदटारी।
गौतमादि गुरु-उर घट व्यापी, परम सुरुचि करतारी।।१।।

सलिल समान कलिलमलगंजन, बुधमनरंजन हारी।
भंजन विभ्रम धूलि प्रभंजन, मिथ्या जलद निवारी।।२।।

कल्याणकतरु उपवनधरिनी, तरिनि भवजलतारी।
बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्ति-नसैनी सारी।।३।।

स्व-पर स्वरूप प्रकाशन को यह, भानु कला अविकारी।
मुनि-मन-कुमुदिनि-मोदन शशिभा, शमसुख सुमन सुबारी।।४।।

जाको सेवत बेवत निजपद, नसत अविद्या सारी।
तीन लोकपति पूजत जाको, ज्ञान त्रिजग हितकारी।।५।।

कोटि जीभ सों महिमा जाकी, कहि न सके पविधारी।
दौल अल्पमति केम कहै यह, अधम उधारन हारी।।६।।

५३

शान्ति सुधा बरसाये जिनवाणी,
वस्तुस्वरूप बताये जिनवाणी।टेक।।

पूर्वापर सब दोष रहित है,
पाप क्रिया से शून्य शुद्ध है।
परमागम कहलाये जिनवाणी।।१।।

परमागम भव्यों को अर्पण,
मुक्ति वधू के मुख का दर्पण।
भव सागर से तारे जिनवाणी।।२।।

राग रूप अंगारों द्वारा,
महा क्लेश पाता जग सारा।
सजल मेघ बरसाये जिनवाणी।।३।।

सप्त तत्त्व का ज्ञान कराये,
अचल विमल निजपद दरसावे।
सुख सागर लहराये जिनवाणी।।४।।

५४

वीर-हिमाचल तैं निकसी, गुरु-गौतम के मुख-कुण्ड ढरी है।
मोह-महाचल भेद चली, जग की जड़ता-तप दूर करी है ॥१॥

ज्ञान-पयोनिधि माँहि रली, बहुभंग-तरंगनि सौं उछरी है।
ता शुचि-शारद गंगनदी प्रति, मैं अंजलि करि शीश धरी है ॥२॥

या जग-मन्दिर में अनिवार, अज्ञान-अंधेर छयौ अति भारी।
श्रीजिन की धुनि दीपशिखा-सम, जो नहिं होत प्रकाशनहारी ॥३॥

तो किस भांति पदारथ-पाँति, कहाँ लहते? रहते अविचारी।
या विधि सन्त कहैं धनि हैं, धनि है, जिन-बैन बड़े उपकारी ॥४॥

तन-चेतन विवहार एकसे,
निहचै भिन्न भिन्न हैं दोइ।
तनकी थुति विवहार जीवथुति,
नियतदृष्टि मिथ्या थुति सोइ॥
जिन सो जीव जीव सो जिनवर,
तन जिन एक न मानै कोइ।
ता कारन तन की संस्तुति सौं,
जिनवर की संस्तुति नहि होइ॥

- समयसार नाटक, पृष्ठ ४८

गुरु भक्ति खण्ड

५५

श्री मुनि राजत समता संग,
कायोत्सर्ग समाहित अंग ।टेक॥
करतैं नहिं कछु कारज तातैं,
आलम्बित भुज कीन अभंग।
गमन काज कछु हू नहिं तातैं,
गति तजि छाके निज रस रंग॥१॥
लोचनतैं लखिवौ कछु नाहीं,
तातै नाशादृग अचलंग।
सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं,
तातै प्राप्त इकन्त सुचंग॥२॥
तह मध्यान्ह माहिं निज ऊपर,
आयो उग्र प्रताप पतंग।
कैधों ज्ञान पवन बल प्रजुलित
ध्यानानल सों उछलि फुल्लिग॥३॥
चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ,
परमानन्द पीयूष तरंग।
भागचन्द्र ऐसे श्री गुरु पद,
वंदत मिलत स्वपद उत्तंग॥४॥

५६

म्हारा परम दिगम्बर मुनिवर आया, सब मिल दर्शन कर लो।
बार-बार आना मुश्किल है भाव भक्ति उर भर लो, हाँ....।टेक।।

हाथ कमंडलु काठ को पीछी पंख मयूर।
विषय वास आरम्भ सब परिग्रह से हैं दूर।।
श्री वीतराग-विज्ञानी का कोई ज्ञान हिया विच धर लो, हाँ...।१।।

एक बार करपात्र में अन्तराय अघ टाल।
अल्प-अशन लें हो खड़े, नीरस-सरस सम्हाल।।
ऐसे मुनि मारग उत्तम धारी, तिनके चरण पकड़ लो, हाँ...।२।।

चार गति दु:ख से डरी, आत्म स्वरूप को ध्याय।
पुण्य पाप से दूर हो ज्ञान गुफा में आय।।
सौभाग्य तरण तारण मुनिवर के तारण चरण पकड़ लो, हाँ..।३।।

५७

परम गुरु बरसत ज्ञान झरी।
हरषि हरषि बहु गरजि गरजि के मिथ्या तपन हरी ।टेक।।
सरधा भूमि सुहावनि लागे संशय बेल हरी।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े समुझि पवन सियरी ।।१।।
स्याद्वाद नय बिजली चमके परमत शिखर परी।
चातक मोर साधु श्रावक के हृदय सुभक्ति भरी ।।२।।
जप-तप परमानन्द बढ्यो है, सुखमय नींव धरी।
द्यानत पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ।।३।।

५८

मैं परम दिगम्बर साधु के गुण गाऊँ गाऊँ रे।
मैं शुद्ध उपयोगी सन्तों को नित ध्याऊँ ध्याऊँ रे।।
मैं पंच महाव्रत धारी को शिर नाऊँ नाऊँ रे ।।टेक।।

जो बीस आठ गुण धरते, मन वचन काय वश करते।
बाईस परीषह जीत जितेन्द्रिय ध्याऊँ ध्याऊँ रे।।१।।

जिन कनक कामिनी त्यागी, मन ममता त्याग विरागी।
मैं स्वपर भेदविज्ञानी के गुण गाऊँ गाऊँ रे।।२।।

कुंदकुंद प्रभुजी विचरते, तीर्थंकर सम आचरते।
ऐसे मुनि मार्ग प्रणेता को मैं ध्याऊँ ध्याऊँ रे।।३।।

जो हित मित वचन उचरते, धर्मामृत वर्षा करते।
सौभाग्य तरण-तारण पर बलि-बलि जाऊँ जाऊँ रे।।४।।

५९

धन-धन जैनी साधु जगत के, तत्त्वज्ञान विलासी हो।।टेक।।

दर्शन बोधमई निज मूरति, जिनको अपनी भासी हो।
त्यागी अन्य समस्त वस्तु में, अहंबुद्धि दुखदासी हो।।१।।

जिन अशुभोपयोग की परिणति, सत्ता सहित विनाशी हो।
होय कदाच शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो।।२।।

छेदत जे अनादि दु:ख दायक, दुविधि बंध की फांसी हो।
मोह क्षोभ रहित जिन परिणति, विमल मयंक विलासी हो॥३॥
विषय चाह दव दाह बुझावन, साम्य सुधारस रासी हो।
भागचन्द पद ज्ञानानंदी, साधक सदा हुलासी हो॥४॥

६०

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥टेक॥
आप तरें अरु पर को तारें निष्प्रही निर्मल हैं ॥
ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥१॥
तिल तुष मात्र संग नहिं जिनके, ज्ञान-ध्यान गुणबल हैं ॥
ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥२॥
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी, मन्दर तुल्य अचल हैं ॥
ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥३॥
भागचन्द तिनको नित चाहैं, ज्यों कमलनि को अलि हैं ॥
ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥४॥

६१

ऐसे मुनिवर देखे वन में, जाके राग द्वेष नहीं मन में॥टेक॥
ग्रीषम ऋतु शिखर के ऊपर, मगन रहे ध्यानन में॥१॥
चातुर्मास तरुतल ठाड़े, बून्द सहे छिन-छिन में॥२॥
शीत मास दरिया के किनारे, धीरज धारें ध्यानन में॥३॥
ऐसे गुरु को मैं प्रति ध्याऊं, देत ढोक चरणन में॥४॥

६२

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी।
साधु दिगम्बर, नगन निरम्बर, संवर भूषण धारी ।टेक॥

कंचन कांच बराबर जिनके, ज्यों रिपु त्यों हितकारी।
महल मसान, मरण अरु जीवन, सम गरिमा अरु गारी॥१॥

सम्यग्ज्ञान प्रधान पवन बल, तप पावक परजारी।
शोधत जीव सुवर्ण सदा जे, काय-कारिमा टारी॥२॥

जोरि युगल कर भूधर विनवे, तिन पद ढोक हमारी।
भाग उदय दर्शन जब पाऊँ, ता दिन की बलिहारी॥३॥

६३

परम दिगम्बर मुनिवर देखे, हृदय हर्षित होता है।
आनन्द उल्लसित होता है;...सम्यग्दर्शन होता है।टेक॥

वास जिनका वन उपवन में, गिरि शिखर के नदी तटे।
वास जिनका चित्त गुफा में, आतम आनन्द में रमे॥१॥

कंचन अरु कामिनी के त्यागी, महा तपस्वी ज्ञानी ध्यानी।
काया की माया के त्यागी, तीन रतन गुण भंडारी॥२॥

परम पावन मुनिवरों के पावन चरणों में नमूँ।
शान्त मूर्ति सौम्य मुद्रा आतम आनन्द में रमूँ॥३॥

चाह नहीं है राज्य की, चाह नहीं है रमणी की।
चाह हृदय में एक यही है, मुक्ति वधू को वरने की।।४।।
भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर, शुद्धातम में रमते है।
क्षण-क्षण में अन्तर्मुख हो, सिद्धों से बाते करते है।।५।।

६४

धन्य मुनीश्वर आतम हित में छोड़ दिया परिवार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ।
धन छोड़ा वैभव सब छोड़ा, समझा जगत असार,
कि तुमने छोड़ दिया संसार ।टेक।।
काया की ममता को टारी, करते सहन परीषह भारी।
पंच महाव्रत के हो धारी, तीन रतन के हो भंडारी।।
आत्म स्वरूप में झूलते करते निज आतम उद्धार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ।।१।।
राग द्वेष सब तुमने त्यागे, बैर विरोध हृदय से भागे।
परमातम के हो अनुरागे, बैरी कर्म पलायन भागे।।
सत् सन्देश सुना भविजन को करते बेड़ा पार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ।।२।।
होय दिगम्बर वन में विचरते, निश्चल होय ध्यान जब करते।
निजपद के आनंद में झूलते, उपशम रस की धार बरसते।।
मुद्रा सौम्य निरखकर मस्तक नमता बारम्बार,
कि तुमने छोड़ा सब घरबार ।।३।।

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु,
महाव्रतधारा धारी,.....महाव्रत धारी ।टेक।।

राग द्वेष नहिं लेश जिन्हों के मन में है...मन में है।
कनक कामिनी मोह काम नहि, तन में है...तन में है।।
परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी,
नमो हितकारी कारी,.....नमो हितकारी।।१।।

शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते....जो रहते।
ग्रीष्म ऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते....अघ दहते।।
तरु तल रहकर वर्षा में, विचलित न होते लख भय
वन अंधियारी भारी,.....वन अंधियारी।।२।।

कंचन-कांच मसान-महल सम, जिनके हैं....जिनके है।
अरि अपमान मान मित्र सम, जिनके है...जिनके हैं।।
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर
भव जल तारी तारी,....भव जल तारी।।३।।

ऐसे परम तपोनिधि जहँ-जहँ जाते हैं....जाते हैं।
परम शांति सुख लाभ जीव सब, पाते है...पाते है।।
भव-भव में सौभाग्य मिले, गुरुपद पूजूं ध्याऊँ,
वरूँ शिवनारी नारी,..... वरूँ शिवनारी।।४।।

६६

हे परम दिगम्बर यती महागुण व्रती, करो निस्तारा।
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।टेक।।

तुम बीस आठ गुणधारी हो, जग जीव मात्र हितकारी हो।
बाईस परीषह जीत धरम रखवारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।।१।।

तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो, प्रभु वीतराग वनवासी हो।
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।।२।।

तुम क्षमा शांति समता सागर, हो विश्व पूज्य नर रत्नाकर।
है हित-मित सत उपदेश तुम्हारा प्यारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।।३।।

तुम धर्म मूर्ति हो समदर्शी, हो भव्य जीव मन आकर्षी।
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।।४।।

है यही अवस्था एक सार, जो पहुंचाती है मोक्ष द्वार।
सौभाग्य आप सा बाना होय हमारा,
नहिं तुम बिन हितू हमारा ।।५।।

(तर्ज-जहाँ डाल डाल पर सोने की चिड़ियां करती हैं बसेरा....

हे परम दिगम्बर मुद्रा जिनकी, वन वन करें बसेरा।
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा।।

शाश्वत सुखमय चैतन्य-सदन में, रहता जिनका डेरा।
मैं उन चरणों का चेरा, हो वन्दन उनको मेरा।टेक।

जहाँ क्ष[illegible]दव आर्जव सत् शुचिता की सौरभ महके।
संयम तप त्याग अकिंचन स्वर परिणति में प्रतिपल चहके।।
हैं ब्रह्मचर्य की गरिमा से, आराध्य बने जो मेरा।।१।

अन्तर-बाहर द्वादश तप से, जो कर्म-कालिमा दहते।
उपसर्ग परीषह-कृत बाधा जो, साम्य-भाव से सहते।
जो शुद्ध अतीन्द्रिय आनन्द-रस का, लेते स्वाद घनेरा।।२।।

जो दर्शन ज्ञान चारित्र वीर्य तप, आचारों के धारी।
जो मन-वच-तन का आलम्बन तज, निज-चैतन्य विहारी।।
शाश्वत सुख दर्शक वचन-किरण से, करते सदा सबेरा।।३।।

नित समता स्तुति वन्दन अरु, स्वाध्याय सदा जो करते।
प्रतिक्रमण और प्रति-आख्यान कर, सब पापों को हरते।।
चैतन्यराज की अनुपम निधियाँ, जिनमें करें बसेरा।।४।।

६८

होली खेलें मुनिराज शिखर वन में
रे अकेले वन में, मधुवन में
मधुवन में आज मची रे होली मधुवन में ।टेक।।

चैतन्य गुफा में मुनिवर बसते, अनन्त गुणों में केली करते
एक ही ध्यान रमायें वन में, मधुवन में.....।१।।

ध्रुवधाम ध्येय की धूनी लगाई, ध्यान की धधकती अग्नि जलाई
विभाव का ईंधन जलावें वन में, मधुवन में....।२।।

अक्षय घट भरपूर हमारा, अन्दर बहती अमृत धारा
पतली धार न भायी मन में, मधुवन में.....।३।।

हमें तो पूर्ण दशा ही चहिये, सादि अनंत का अनंद लहिये
निर्मल भावना भायी वन में, मधुवन में.....।४।।

पिता झलक ज्यों पुत्र में दिखती, जिनेन्द्र झलक मुनिराज चमकती
श्रेणी मांडी पलक छिन में, मधुवन में.....।५।।

नेमिनाथ गिरनार में देखो, शत्रुंजय पर पाण्डव देखो
केवलज्ञान लियो है छिन में, मधुवन में.....।६।।

बार-बार वन्दन हम करते, शीश चरण में उनके धरते
भव से पार लगाये वन में, मधुवन में.....।७।।

रथयात्रा गीत खण्ड

६९

धन्य धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है।
जिन-चरणों की भक्ति करके आनन्द अपार है।टेक।।

खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं।
दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई हैं।।
चारों और देख लो भीड़ बेशुमार है।।१।।

भक्ति से नृत्य गान कोई हैं कर रहे।
आतम सुबोध कर पापों से डर रहे।।
पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है।।२।।

जय-जय के नाद से गूंजा आकाश है।
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आज है।।
देख लो सौभाग्य खुला आज मुक्ति द्वार है।।३।।

महावीर के सन्देशों को जीवन में अपनाऐंगे।
भेद-ज्ञान की ज्योति जलाकर महावीर बन जाऐंगे।।
सत्य अहिंसा अनेकान्त ही जिनवाणी का सार है।।४।।

७०

अपना ही रंग मोहे रंग दो प्रभुजी,
आतम का रंग मोहे रंग दो प्रभुजी।
रंग दो रंग दो रंग दो प्रभुजी।टेक।।
ज्ञान में मोह की धूल लगी है,
धूल लगी है प्रभु धूल लगी है।
इससे मुझको छुड़ा दो प्रभुजी।।१।।
सच्ची श्रद्धा रंग अनुपम,
रंग अनुपम प्रभु रंग अनुपम।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी।।२।।
रत्नत्रय रंग तुमरा सरीखा,
तुमरा सरीखा, तुमरा सरीखा।
इससे मोकों सजा दो प्रभुजी।।३।।
सेवक शरण गही जिनवर की,
सेवक शरण गही आतम की।
जनम-मरण दुःख मिटा दो प्रभुजी।।४।।

७१

रंग मां.... रंग मां..... रंग मां रे,
प्रभु थारा ही रंग मा रंगि गयो रे।टेक।।
आया मंगल दिन मंगल अवसर,
भक्ति मां थारी हूँ नाच रह्यो रे।।१।।

गाओ रे गाना आज ध्रुवधाम का,
आतमदेव बुलाय रह्यो रे ॥२॥
आतमदेव को अंतर में देख्या,
सुख -सरोवर उछल रह्योरे॥३॥
भाव भरीने हम भावना ये भायें,
आप समान बनाय लीज्यो रे॥४॥
समयसार में कुन्दकुन्द देव,
भगवान कहकर जगाय रह्यो रे,
प्रभु पामर बनी ने क्यों सोय रह्यो रे॥५॥
आज हमारो उपयोग पलट्यो
चैतन्य-चैतन्य भास रह्यो रे॥६॥

७२

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु तुझ ही में डोले,
तुझ ही में डोले हाँ तुझ ही में डोले,
मन की तू घुंडी को खोल, खोल खोल खोल.....;
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ।टेक॥

क्यों जाता गिरनार क्यों जाता काशी,
घट ही में है तेरे घट घट का वासी,
अन्तर का कोना टटोल, टोल टोल टोल.....;
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥१॥

चारों कषायों को तूने है पाला,
आतम प्रभु को जो करती है काला,
इनकी तू संगति को छोड़, छोड़ छोड़ छोड़.....,
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥२॥

पर में जो ढूड़ा न भगवान पाया,
संसार को ही है तूने बढ़ाया,
देखो निजातम की ओर, ओर ओर ओर.....;
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥३॥

मस्तों की दुनियां में तू मस्त हो जा,
आतम के रंग में ऐसा तू रम जा,
आतम को आतम में घोल, घोल घोल घोल.....;
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥४॥

भगवान बनने की ताकत है तुझ में,
तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं,
ऐसी तू मान्यता को छोड़, छोड़ छोड़ छोड़.....;
तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥५॥

७३

करले आतम ज्ञान परमातम बन जइये।
करले भेद-विज्ञान रे ज्ञानी बन जइये।टेक॥

जग झूठा और रिश्ते झूठे, रिश्ते झूठे नाते झूठे।
सांचो है आतमराम, परमातम बन जइये।।१।।

कुन्दकुन्द आचार्य देव ने, आतम तत्त्व बताया है।
शुद्धातम को जान, परमातम बन जइये।।२।।

देह भिन्न है आतम भिन्न है, राग भिन्न है ज्ञान भिन्न है।
आतम को ही पहिचान, परमातम बन जइये।।३।।

कुन्दकुन्द के ही प्रताप से, कहान गुरु के ही प्रताप से।
ध्रुव की धूम मची है रे,
ध्रुव का ध्यान लगाय, परमातम बन जइये।।४।।

७४

गा रे भैया, गा रे भैया, गा रे भैया गा।
प्रभु गुण गा तू समय न गंवा।टेक।।

किसको समझे अपना प्यारे,
स्वारथ के है रिश्ते सारे।
फिर क्यों प्रीति लगाये, ओ भैयाजी।।१।। गा रे भैया गा....।

दुनियाँ के सब लोग निराले,
बाहर उजले अन्दर काले।
फिर क्यों मोह बढ़ाये, ओ बाबूजी।।२।। गा रे भैया गा।....।

मिट्टी की यह नश्वर काया,
जिसमें आतमराम समाया।
उसका ध्यान लगा ले, ओ दादाजी।।३।। गा रे भैया गा।...।
स्वारथ की दुनियाँ को तजकर,
निश-दिन प्रभु का नाम जपा कर।
सम्यग्दर्शन पाले, ओ काकाजी।।४।। गा रे भैया गा।.....।
शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
निर्मल भेदज्ञान प्रगटा कर।
मुक्ति-वधू को पा ले, ओ लालाजी।।५।। गा रे भैया गा।...।

७५

जय जिन-शासन सुखकार रे रंग केशरियो,
जय भवदधि तारणहार रे रंग केशरियो।
रंग केशरियो, रंग केशरियो, रंग केशरियो, रंग केशरियो।।टेक।।

जय वीतराग-विज्ञान रे रंग केशरियो।
जय शुद्धातम गुणखान रे रंग केशरियो ।।१।।

जय सम्यग्दर्शन-ज्ञान रे रंग केशरियो।
सम्यक्-चारित्र महान रे रंग केशरियो ।।२।।

जय कुन्दकुन्द मुनिराज रे रंग केशरियो,
जय समयसार सरताज रे रंग केशरियो ।।३।।

जय अमृतचन्द्र महान रे रंग केशरियो,
जय आत्मख्याति गुणखान रे रंग केशरियो ॥४॥

जय नवतत्त्वों का सार रे रंग केशरियो
शुद्धातम ज्योति महान रे रंग केशरियो ॥५॥

हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।
भावना अपनी का फल हम पा गये।।टेक।।

वीतरागी हो तुम्हीं सर्वज्ञ हो।
सप्त तत्त्वों के तुम्हीं मर्मज्ञ हो।।
मुक्ति का मारग तुम्हीं से पा गये।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।१।।

विश्व सारा है झलकता ज्ञान में।
किन्तु प्रभुवर लीन है निज ध्यान में।।
ध्यान में निज-ज्ञान को हम पा गये।।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।२।।

तुमने बताया जगत के सब आत्मा।
द्रव्य-दृष्टि से सदा परमात्मा।।
आज निज परमात्मा पद पा गये।।
हे प्रभो! चरणों में तेरे आ गये।।३।।

अध्यात्म/वैराग्य गीत खण्ड

७६

ये शाश्वत सुख का प्याला, कोई पियेगा अनुभव वाला।
ध्रुव अखण्ड है, आनन्द कन्द है, शुद्ध बुद्ध चैतन्य पिन्ड है।।
ध्रुव की फेरो माला। कोई.....।।१।।
मंगलमय है मंगलकारी, सत् चित् आनन्द का है धारी।
ध्रुव का हो उजियारा। कोई...।।२।।
ध्रुव का रस तो ज्ञानी पावे, जन्म-मरण का दु:ख मिटावे।
ध्रुव का धाम निराला। कोई...।।३।।
ध्रुव की धूनी मुनि रमावें, ध्रुव के आनन्द में रम जावें।
ध्रुव का स्वाद निराला। कोई...।।४।।
ध्रुव की शरणा जो कोई जावे, दुष्ट कर्म को मार भगावे।
ध्रुव का पंथ निराला। कोई....।।५।।
ध्रुव के रस में हम रम जावें, अपूर्व अवसर कब यह पावें।
ध्रुव का हो मतवाला। कोई...।।६।।

७७

आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, आत्मा।
मैं सदा ज्ञायक-स्वभावी आत्मा..... ।टेक।।
शस्त्र से भी मैं कभी कटता नहीं।
अग्नि से भी मैं कभी जलता नहीं।
जल गलाये तो कभी गलता नहीं।। मैं सदा.....।।१।।

चर्म-चक्षु से कभी दिखता नहीं।
मूर्ख नर अज्ञान वश जाने नहीं।
ज्ञानियों की साध्य-साधक आत्मा।। मैं सदा.....।।२।।

क्रोध माया मान से भी भिन्न हूँ।
लोभ अरु रागादि से भी भिन्न हूँ।
भाव-कर्मों से रहित मै आत्मा।। मैं सदा.....।।३।।

गोरा-काला जो भी दिखता चाम है।
मोटा-पतला होना उसका काम है।
सब शरीरों से रहित मैं आत्मा।। मैं सदा.....।।४।।

७८

जैनधर्म है हमको प्यारा हम इसके अनुयायी है।
राग-भाव में धर्म मानना सबसे बड़ी हैरानी है।।
ज्ञान-दीप ले चल-चल; बनकर रहो अचल-अचल।
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्र कर।टेक।।

चारों गतियो से टकराये, नरकों के दुःख झेले हैं।
थावर विकलत्रय पशुगति, आदिक के पहने चोले हैं।
जिनवर सच्चा बोल रहा है, तत्त्व सभी आजाद हैं।१।।

हम हैं शाश्वत आदि-अन्त बिन हम भगवन-सम ज्ञानी हैं।
हम निज से हैं निज के कारण, निज के कर्तावान है।
उपादान से कार्य हमारा, पर करता अभिमान है।।२।।

७९

ज्ञाता द्रष्टा राही हूँ अतुल सुखों का ग्राही हूँ ।
बोलो मेरे संग, आनन्दघन आनन्दघन ॥
आत्मा में रमूंगा मैं क्षण-क्षण में
चाहे मेरा ज्ञान जाने निज पर को
अपने को जाने बिना लूंगा नहीं दम
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम।
सुख में दुःख में, दुःख में सुख में एक राह पर चल—॥१॥
धूप हो या गर्मी बरसात हो जहाँ
अनुभव की धारा बहाऊँगा वहाँ
विषयों का फिर नहीं होगा जनम
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम
सुख में दुःख में, दुःख में सुख में एक राह पर चल—॥२॥
गुण अनन्त का स्वामी हूँ मै मुझमें ये रतन
गणधर भी हार गये कर वर्णन
अनुपम और अद्भुत है मेरा ये चमन
आगम ही आगम बढ़ाऊँगा कदम
सुख मे दुःख में दुःख मे सुख में एक राह पर चल—॥३॥

८०

करलो आतम-ज्ञान, करलो भेद-विज्ञान
आत्मस्वभाव में तू जमना, फिर ना ये नर-तन धरना ।टेक॥

पुण्य-उदय से यह भव पाया फिर भी विषयों में ललचाया।
विषय तजो निज हित करना, फिर ना ये नर-तन धरना।।१।।

मैं त्रिकाल नहीं पर का स्वामी, सदा भिन्न चेतन जगनामी।
निज शाश्वत सुख को वरना, फिर ना ये नर-तन धरना।।२।।

कार्य विकल्पों से नहीं होता, मूर्ख व्यर्थ ही बोझा ढ़ोता।
निर्विकल्प निजको लखना, फिर ना ये नर-तन धरना।।३।।

अक्षय पूर्ण स्वयं निज आतम, निर्विकल्प शाश्वत परमातम।
ऐसी श्रद्धा अब करना, फिर ना ये नर-तन धरना।।४।।

प्रभुवर अब कुछ भी नहीं चाहूँ निज स्वभाव में ही रम जाऊँ।
ज्ञाता-दृष्टा अब रहना, फिर ना ये नर-तन धरना।।५।।

८१

संत साधु बन के विचरूँ वह घड़ी कब आयेगी।
चल पड़ूं में मोक्ष पथ में, वह घड़ी कब आयेगी।टेक।।

हाथ मे पीछी कमण्डलु, ध्यान आतम राम का।
छोड़कर घरबार, दीक्षा की घड़ी कब आयेगी।।१।।

आयेगा वैराग्य मुझको, इस दु:खी संसार से।
त्याग दूंगा मोह ममता वह घड़ी कब आयेगी।।२।।

पाँच समिति तीन गुप्ति, बाईस परिषह भी सहूं।
भावना बारह जु भाऊँ, वह घड़ी कब आयेगी।।३।।

बाह्य उपाधि त्याग कर निज तत्त्व का चिंतन करूँ।
निर्विकल्प होवे समाधि वह घड़ी कब आयेगी।।४।।

भव भ्रमण का नाश होवे इस दुःखी संसार से।
विचरूँ मैं निज आत्मा में, वह घड़ी कब आयेगी।।५।।

८२

वीर प्रभु का है कहना, राग में जीव तू मत फंसना।

अनादि काल से रुलता है, दृष्टि पर में करता है।
अब ना ये गलती करना, राग में जीव..... ।।१।।

तन-मन्दिर में देव है तू, ज्ञायक को पहिचान ले तू ।
समयसार पर तू चलना, राग में जीव..... ।।२।।

तू तो गुणों का सागर है, पूर्णानन्द महाप्रभु है।
निज में ही दृष्टि करना, राग में जीव..... ।।३।।

गुण पर्याय में भेद न कर, त्रैकालिक में दृष्टि कर।
मोक्षपुरी में है चलना, राग में जीव..... ।।४।।

८३

चन्द क्षण जीवन के तेरे रह गये,
और तो विषयों में सारे बह गये ।टेक।।
चक्रवर्ती भी न बच पाये यहाँ,
मृत्यु के उपरांत जाएगा कहाँ?
मौत की आँधी में तृण सम उड़ गये ।। चन्द क्षण.....।।१।।

अपनी रक्षा को बनाये कई महल,
किन्तु मृत्यु की रहे बेला अचल।
तास के पत्तों के घर सम ढह गये ।।चन्द क्षण.....।।२।।

जाने कब जाना पड़े तन छोड़कर,
इष्ट मित्रों से सदा मुँह मोड़कर।
जानकर अनजान क्यों तुम बन गये ।। चन्द क्षण.....।।३।।

श्रद्धा मोती न मिला राही तुझे,
कंकरों का ही भरोसा है तुझे।
ज्ञान के सागर की तह तुम न गये ।। चन्द क्षण.....।।४।।

लक्ष्य था शिवपुर में जाने का बड़ा,
जिस समय मां गर्भ में था तू पड़ा।
लक्ष्य क्यों अपना भुलाकर रह गये ।। चन्द क्षण.....।।५।।

छोड़ धन-दौलत सिकन्दर चल दिया
आत्मा का हित जरा भी नहिं किया।
हीरे-मोती के खजाने रह गये ।। चन्द क्षण.....।।६।।

क्या तू लेकर आया था, क्या जायेगा
तन भी एक दिन खाक में मिल जायेगा।
देह भी है ज्ञेय, ज्ञानी कह गये ।। चन्द क्षण.....।।७।।

ज्ञान का अंदर समुन्दर बह रहा,
खोज सुख की मूढ़ बाहर कर रहा।
क्यों चिदानन्द व्यर्थ में दुख सह रहे।। चन्द क्षण.....।।८।।

८४

सुन रे जिया चिरकाल गया,
तूने छोड़ा न अब तक प्रमाद, जीवन थोड़ा रहा ।टेक।।

जिनवाणी कहती है तेरी कथा,
तूने भूल करी सही भारी व्यथा।
अब करले स्वयं की पहचान ।। जीवन थोड़ा रहा ।।१।।

जीव तत्त्व है तू, परम उपादेय,
अजीव सभी हैं ज्ञान के ज्ञेय।
निज को निज, पर को पर जान ।। जीवन थोड़ा रहा ।।२।।

आस्रव बंध ये भाव विकारी,
चेतन ने पाया दुःख इनसे भारी।
मिथ्यात्व को ले पहिचान ।। जीवन थोड़ा रहा ।।३।।

संवर निर्जरा शुद्ध भाव है,
मोक्ष तत्व पूर्ण बंध अभाव है।
इनको ही हित रूप मान ।। जीवन थोड़ा रहा ।।४।।

शाश्वत चेतन रूप ध्रुव अमल है,
अचल अखण्ड अविनाशी विमल है।
अब तो कर ले सम्यक् श्रद्धान ।। जीवन थोड़ा रहा ।।५

८५

जिया कब तक घूमेगा संसार में,
चलो चलो न चेतन-दरबार में ।टिक।।
अनादि काल में घूम रहा है,
पर में तू सुख को खोज रहा है।
जहां सुख का नहीं है ठिकाना ।। चलो चलो न.....।।१।।

सिद्ध समान स्वभाव है चेतन,
जड़ कर्मों से भिन्न है चेतन।
स्व सन्मुख पर्याय प्रगटाओ ना ।। चलो चलो न.....।।२।।

अब तक जीवन ऐसा बिताया,
संसार को ही तूने बढ़ाया।
आज पुण्य उदय है हमारा ।। चलो चलो न.....।।३।।

मृत्यु महोत्सव की तैयारी करले,
ममता को तजकर समता को धरले
तेरे पास है सुख का खजाना ।। चलो चलो न.....।।४।।

आनन्द-सागर अन्तर में उछले,
आनन्द-आनन्द की लहर है डोले।
उस सागर में डुबकी लगाओ ना ।। चलो चलो न.....।।५।।

८६

मोहे भावे न भैया थारो देश, रहूँगा मैं तो निज-घर में ।टेक।।

मोहे न भावे यह महल अटारी, झूंठी लागे मोहे दुनियाँ सारी।
मोहे भावे नगन सुभेष, रहूँगा मैं तो निज-घर में।।१।।

हमें यहाँ अच्छा नहीं लगता, यहाँ हमारा कोई न दिखता।
मोहे लागे यहाँ परदेश, रहूँगा मैं तो निज-घर में।।२।।

श्रद्धा ज्ञान चरित्र निवासा, अनंत गुण परिवार हमारा।
मैं तो जाऊँगा सुख के धाम, रहूँगा मै तो निज-घर में।।३।।

कब पाऊँगा निज में थिरता मै तो इसके लिए तरसता।
मै तो धारूँ दिगम्बर भेष, रहूँगा मै तो निज-घर में।।४।।

८७

ओ जाग रे चेतन जाग, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं।
तूने किससे करी है प्रीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं ।टेक।।

पर-द्रव्यों में सुख नहीं है, तज इनकी अभिलाषा।
धन शरीर परिवार अरु बांधव, सब दुःख की परिभाषा।
तेरी दृष्टि ही है विपरीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं।।१।।

स्वर्ग कभी तू नर्क कभी तू, देव तिर्यंच में गया था।
मग्न रहा बाह्य क्रिया-काण्डों में, ध्रुव का न आश्रय लिया था।
कैसे मिलते तुझे मेरे मीत, तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं।।२।।

अपने स्वरूप को न ध्याया कभी भी, अपने स्वरूप में आ जा।
पर के गाने गाता रहा तू, निज का आनन्द कैसे पाता।
प्रभु पाने की नही है ये रीत तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं॥३॥

८८

जब तेरी डोली निकाली जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी ।।टेक।।
उन हकीमों से यूँ कह दो बोलकर
जो दवा करते किताबें खोलकर।
ये दवा हरगिज न खाली जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।१।।
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया
मरते दम लुकमान भी यूं कह गया।
यह घड़ी हरगिज न टाली जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।२।।
ये मुसाफिर क्यों पसरता हैं यहाँ
यह किराये का मिला तुझको मकां।
कोठरी खाली करा ली जायेगी
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।३।।
चेत कर ओ भाई तुम प्रभु को भजो,
मोह रूपी नींद से जल्दी जगो,
आत्मा परमात्मा हो जायेगी,
बिन मुहूरत के उठा ली जायेगी।।४।।

८९

सोते सोते में निकल गयी सारी जिन्दगी।
सारी जिन्दगी तेरी प्यारी जिन्दगी।।
बोझा ढोते में निकल गयी।।टेक।।

जनम लेत ही इस धरती पर तूने रुदन मचाया।
आंखें भी न खुलने पायी, भूख-भूख चिल्लाया।।
रोते रोते में निकल गयी सारी जिन्दगी ।।१।।

खेलकूद में बचपन बीता, यौवन पा बौराया।
धर्म कर्म का मर्म न जाना, विषय भोग लपटाया।।
भोगों भोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी ।।२।।

धीरे धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डगमग डोले काया।
सबके सब रोगों ने देखो डेरा खूब जमाया।।
रोगों रोगों में निकल गयी सारी जिन्दगी ।।३।।

जिसको तू अपना समझे था, वह दे बैठा धोखा।
प्राण गये फिर जल जायेगा ये माटी का खोका।।
खोका ढोने में निकल गयी सारी जिन्दगी ।।४।।

९०

सजधज के जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी।
ना सोना काम आयेगा, ना चांदी आयेगी।।टेक।।

छोटा-सा तू कितने बड़े अरमान हैं तेरे।
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे।
मिट्टी की काया मिट्टी में जिस दिन समायेगी।।१।।

पर छोड़ के पंछी तू पिंजरा छोड़ के उड़ जा।
माया-महल के सारे बन्धन तोड़ के उड़ जा।
धड़कन में जिस दिन मौत तेरी गुनगुनायेगी।।२।।

९१

देख तेरी पर्याय की हालत क्या हो गई भगवान।
तू तो गुण अनंत की खान।
चिदानन्द चैतन्यराज क्यों अपने से अनजान।
तुझ में वैभव भरा महान।।टेक।।

बड़ा पुण्य अवसर यह आया, श्री जिनवर का दर्शन पाया।
जिनने निज को निज में ध्याया, शाश्वत सुखमय वैभव पाया।।
इसीलिये श्री जिन कहते है, कर लो भेद-विज्ञान।।१।

तन-चेतन को भिन्न पिछानों, रत्नत्रय की महिमा जानो।
निज को निज पर को पर जानो, राग भाव से मुक्ति न मानो।।
सप्त तत्त्व की यही प्रतीति देगी मुक्ति महान।।२।।

अपने स्वरूप को न ध्याया कभी भी, अपने स्वरूप में आ जा।
पर के गाने गाता रहा तू, निज का आनन्द कैसे पाता।
प्रभु पाने की नहीं है ये रीत तुझे ध्रुवराज बुलाते हैं।।३।।

आयो आयो रे हमारो बड़ो भाग कि हम आए पूजन को।
पूजन को प्रभु दर्शन को, पावन प्रभु-पद पर्शन को।।टेक।।
जिनवर की अर्न्तमुख मुद्रा आतम दर्श कराती।
मोह महामल प्रक्षालन कर शुद्ध स्वरूप दिखाती।।१।।
भव्य अकृत्रिम चैत्यालय की जग में शोभा भारी।
मंगल ध्वज ले सुरपति आए शोभा जिसकी न्यारी।।२।।
अनेकान्तमय वस्तु समझ जिन शासन ध्वज लहरावें।
स्याद्वाद शैली से प्रभुवर मुक्ति मार्ग समझावें।।३।।

आओ रे आओ रे ज्ञानानन्द की डगरिया।
तुम आओ रे आओ, गुण गाओ रे गाओ।
चेतन रसिया आनन्द रसिया।।टेक।।
बड़ा अचम्भा होता है, क्यों अपने से अनजान रे।
पर्यायों के पार देख ले, आप स्वयं भगवान रे।।१।।
दर्शन-ज्ञान स्वभाव में, नहीं ज्ञेय का लेश रे।
निज में निज को जान कर तजो ज्ञेय का वेश रे।।२।।
मैं ज्ञायक मैं ज्ञान हूँ, मैं ध्याता मैं ध्येय रे।
ध्यान-ध्येय में लीन हो, निज ही निज का ज्ञेय है।।३।।

प्रासंगिक गीत खण्ड

९२

प्रतिष्ठा महोत्सव मनाओ मेरे साथी'
जीवन सफल बनाओ मेरे साथी।।
आओ रे आओ आओ मेरे साथी।
पंचकल्याण रचाओ मेरे साथी, ।। प्रतिष्ठा महोत्सव ।टेक।।

स्वर्गपुरी से प्रभुजी पधारे,
मति श्रुत ज्ञान अवधि को धारे।
अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का,
जन्म मरण के कष्ट निवारे।।
गर्भ कल्याण मनाओ मेरे साथी ।। प्रतिष्ठा महोत्सव....।१।।

प्रथम स्वर्ग से इन्द्र पधारे,
ऐरावत हाथी ले आए।
पाण्डु-शिला पर न्हवन रचाया,
सकल पाप-मल क्षय कर डारे।।
जन्म कल्याण मनाओ मेरे साथी । प्रतिष्ठा महोत्सव....।।२।।

प्रभु ने आतम ध्यान लगाया,
निर्ग्रन्थों का पथ अपनाया।
नग्न दिगम्बर दीक्षा धर कर,
राग-द्वेष को दूर भगाया।।
तप कल्याण मनाओ मेरे साथी ।। प्रतिष्ठा महोत्सव....।।३।।

शुक्लध्यान की अग्नि जलाकर,
चार घातिया कर्म नशाया।
केवलज्ञान प्रगट कर प्रभु ने,
जग को मुक्ति-मार्ग बताया।।
ज्ञान कल्याण मनाओ मेरे साथी ।। प्रतिष्ठा महोत्सव....।।४।।

चरम-शरीर छोड़कर प्रभुजी,
सिद्धशिला पर जाय विराजे।
सादि-अनन्त काल तक शाश्वत
सुख निज परिणति में प्रगटाये।।
मोक्ष-कल्याण मनाओ मेरे साथी ।। प्रतिष्ठा महोत्सव....।।५।।

९३

लहर-लहर लहराये, केशरिया झण्डा जिनमत का।
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी।
यह सबका मन हरषाये, केशरिया झण्डा जिनमत का
केशरिया झण्डा जिनमत का हो जी हो जी।टेक।।

फर फर फर फर करता झण्डा, गगन-शिखा पर डोले—२
स्वस्तिक का यह चिन्ह अनूठा, भेद हृदय के खोले—२
यह ज्ञान की ज्योति जलाये, केशरिया झण्डा ।।१।।

इसकी शीतल छाया में हम पढ़ें रतन जिनवाणी—२
सत्य अहिंसा प्रेम मार्ग पर, बने देश लासानी—२
यह सत्पथ पर पहुचाये, केशरिया झण्डा ।।२।।

९४

गर्भ-कल्याणक आ गया,
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ।।टेक।।

स्वर्गपुरी से देवगति को तजकर प्रभु ने नरगति पाई।
धन्य धन्य मरुदेवी माता तीर्थंकर की मां कहलाई।।
अयोध्या नगर में आनन्द छा गया ।।१।।

सोलह सपने मां ने देखे मन में अचरज भारी है।
नाभिराय से फल जब पूछा उपजा आनन्द भारी है।
तीन भुवन का नाथ आ गया ।।२।।

अन्तिम गर्भ हुआ प्रभुजी का अब दूजी माता नहीं होगी।
शुद्धातम के अवलम्बन से आत्मसाधना पूरी होगी।
ज्ञान-स्वभाव हमें भा गया ।।३।।

९५

जयपुर शहर में पंच-कल्याणक जय-जय आदिनाथ रे,
चौबीसों जिनराज रे।
जयपुर शहर में गर्भ-कल्याणक अन्तिम गर्भ महान रे,
जय-जय ऋषभकुमार रे ।।टेक।।

सर्वार्थ-सिद्धि से प्रभु जी पधारे,
अयोध्या नगर में आनन्द छाए।
खुशियाँ अपरम्पार रे, जय-जय ऋषभकुमार रे।।१।।

पुष्प और रत्नों की वर्षा,
सुरपति करते हरषा-हरषा।
देव करे जयकार रे, जय-जय ऋषभकुमार रे।।२।।

सोलह सपने मां ने देखे,
उनके फल राजा से पूछे।
अचरज में है मात रे, जय-जय ऋषभकुमार रे।।३।।

देवी छप्पन आऐं कुमारी,
माता की सेवा सुखकारी।
मन में माँ हर्षाय रे, जय-जय ऋषभकुमार रे।।४।।

९६

सुनो जी,
माँ ने देखे सोलह सपने, जाने उनका फल क्या होगा।

प्रथम सुगज ऐरावत देख्यो, मेघ समान सु-गरज घने।
दूजा बैल एक शुभ देखा, उन्नत कंधा शब्द भने।
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥१॥

तीजे सिंह धवल शुभ देखा, कंधे लाल सुवर्ण बने।
सिंहासन थित लक्ष्मी देखी, नाग युगल से न्हवन सने।
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥२॥

पाँचे फूलमाल-द्वय गुंजित, भ्रमर भजत गुण नाथ तने।
छट्ठे शशि पूरण तारागण, अमृत झरता जगत तने।
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा अचरज होवे माँ को, सुनोजी॥३॥

सप्तम सूर्य निशातम हारी, पूर्व दिशा से उदित ठने।
अष्टम मीन-युगल सर, रमते देखे चंचल भाव जने॥
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥४॥

सुवर्ण-कलश द्वय जल पूरण भर, कमलपत्र से ढकत घने।
दसमें हंस रमण करते सर, कमल गंध युत लहर ठने॥
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को ॥५॥

सागर दर्पण-सम निर्मल लख, लसत तरंगनि हसत घने।
बारम सिंहासन सुवर्णमय, सिंहपीठ मणि जड़ित बने॥
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥६॥

तेरम स्वर्ग विमान रतनमय, भेजत सुर अनुराग घने।
चौदम नाग-भवन भू उठता, देखा कांति अपार जने॥
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥७॥

पन्द्रम रत्न-राशि युति पूरण, दुःख-दारिद्र संहार हने।
सोलम धूम रहित शुभ पावक, अष्ट कर्म जल जात घने।
उच्च वृषभ स्वर्णमय आयो, मुख प्रवेश करता अपने॥
ऐसा स्वप्न कभी नहीं देखा, अचरज होवे माँ को॥८॥

९७

सोल-सोल सपने देखे हैं आज, फल बताओ जी महाराज।
नाभिराय का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज॥टेक॥

हाथी भी देखा वृषभ भी देखा, सिंह और लक्ष्मी का अवतार।
बलवान होगा पुत्र हे मात, कर्मठ होगा तेरा लाल।
प्रतापी सुत की है तू मात, ज्ञानलक्ष्मी को धरनार॥१॥

माला भी देखी चन्द्र भी देखा, देखा चढ़ता सूर्य प्रकाश।
कोमल होगा पुत्र महान, शीतल होगा वह गुणखान।
काटेगा अज्ञान अंधकार, होगा वह तो सूर्य समान॥२॥

कलश भी देखा मीन भी देखी. सागर और सरोवर शान्त।
गम्भीर होगा सिंधु समान, होगा ज्ञान-सरोवर खान।।३।।

सिंहासन और देव विमान, देखा रत्नों का भंडार।
जीतेगा तीन लोक को नाथ, लायेगा उन्हें देव-विमान।।
अवधिज्ञान विशाल भवन, सोहेगा वो रत्न समान।।४।।

उज्ज्वल-उज्ज्वल अग्नि समान, लाल करेगा अहो निहाल।
मुख में स्वर्ण वृषभ जो आया, मानों तीर्थंकर अवतार।
सफल हुई नारी पर्याय, -त्रिभुवन है नतमस्तक आज।।५।।

९८

बधाई आज मिल गाओ, यहाँ आदिनाथ जन्मे है।
बनादो गीत मंगलमय, यहाँ आदिनाथ जन्मे हैं।टेक।।

बिछा दो चांदनी चंदा, सितारो नाचने आओ
सुनहला थाल भर ऊषा, प्रभाकर आरती लाओ
सुस्वागत साज सजवाओ, यहाँ आदिनाथ जन्मे हैं।१।।

लतायें तुम बलैयाँ लो, हृदय के फूल हारों से।
तितलियाँ रंग बरसाओ, बहारों की बहारों से।
मुबारकवाद अलि गाओ, यहाँ आदिनाथ जन्में हैं।।२।।

उमड़ कर गंगा यमुना तुम, चरण-प्रक्षाल कर जाओ।
अरी धरती उगल सोना, धनद सम कोष भर जाओ।।
जगत आनन्द-घन छाओ, यहाँ आदिनाथ जन्में हैं।।३।।

सफल हो आगमन इनका, हमें सौभाग्य स्वागत का।
सुखद जिनराज के दरशन, इष्ट साधर्मी सज्जन का।।
मंगलाचार नित गाओ, यहाँ आदिनाथ जन्मे हैं।।४।।

९९

आया पंच-कल्याणक महान, हिल मिल नृत्य करो ।।टेक।।

इन्द्र कुबेर स्वर्ग से आये, हीरा रत्न पुष्प बरसाये
मरुदेवी के अंगना में आज, हिलमिल नृत्य करो ।।१।।

निरखत प्रभु छवि मन हरषाये, इन्द्र ने नेत्र हजार बनाये
गाओ सब मिल मंगल-गान, हिलमिल नृत्य करो ।।२।।

भाई भी आओ बहना भी आओ, पंचकल्याणक की पूजा रचाओ,
करो आतम का अब कल्याण, हिलमिल नृत्य करो ।।३।।

१००

चाल म्हारा भायला तू, जयपुर शहर में आज रे।
वीर प्रभु का दर्शन करके, सफल करो अवतार रे।
चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।टेक।।

शुद्धातम की बात बतावे, हरेक जीव को शुद्ध बतावे।
पाओ आतम ज्ञान रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।१।।

आतम चर्चा जहाँ है चलती, भेद-ज्ञान की कला है मिलती।
एक यही सुखकार रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।२।।

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हर्षा-हर्षा।
वन्दों वीर महान रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।३।।

चारों ओर है आनंद छाया, मन में भक्ति-भाव जगाया।
हर्षित सब नर-नार रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।४।।

अवसर बड़ा सुहाना आया, देख-देख कर मन हर्षाया।
करलो आतम-ज्ञान रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।५।।

मंगल उत्सव आज यहाँ पर, मंगल पंचकल्याणक यहाँ पर।
आओ सब नर-नार रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।६।।

पंच कल्याण हुआ सुखकारी, हर्षित हैं सारे नर-नारी।
खुशियां अपरम्पार रे, चाल म्हारा भायला जयपुर शहर में ।।७।।

१०१

शिखर पे कलश चढ़ाओ म्हारा साथी।
मोक्ष-महल में आओ म्हारा साथी।टेक।।

शुद्धातम को लक्ष्य बनाकर,
आतम में अपनापन लाकर।
समकित नींव भराओ म्हारा साथी।।१।।
नय-प्रमाण दीवार बनाओ,
अनेकान्त का रंग चढ़ाओ।
चारित्र छत डलवाओ मेरे साथी।।२।।
रत्नत्रय का शिखर बनाओ,
केवलज्ञान का कलश चढ़ाओ।
मोक्षमहल में आओ म्हारा साथी।।३।।

१०२

जीयरा.....जीयरा..... जीयरा.....
जीवराज उड़ के जाओ सम्मेदशिखर में।
भाव सहित वन्दन करो, पार्श्व चरण में ।।टेक।।

आज सिद्धों से अपनी बात हो के रहेगी,
शुद्ध आतम से मुलाकात हो के रहेगी।
रंग रहित, राग रहित, भेद रहित जो,
मोह रहित, लोभ रहित, शुद्ध बुद्ध जो, जीयरा....जीयरा.....।।१।।

ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है,
सारी उपमाऐं जिनसे आज शरमाई हैं।

अनन्तज्ञान अनन्तसुख अनन्तवीर्य मय,
अनन्त सूक्ष्म नाम रहित अव्याबाधी हैं जीयरा....जीयरा....॥२॥

अहो! शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है,
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है।
शुरु करें आज यहाँ आत्म साधना,
चतुर्गति में हो कभी जन्म मरण ना जीयरा....जीयरा.....॥३॥

१०३

करलो इन्द्रध्वज का पाठ आई मंगल घड़ी।
आई मंगल घड़ी आई सुखद घड़ी, करलो इन्द्रध्वज ।टेक॥

मध्यलोक के चारशतक अट्ठावन जिनगृह पूजो।
सभी अकृत्रिम शाश्वत जिन-चैत्यालय नित पूजो॥१॥

विविध चिन्ह की ध्वजा चढ़ाओ गाओ मंगलचार।
इस विधान का उत्तम फल है पुण्य अटूट अपार॥२॥

इन्द्रों सम अतंरमन सज्जित करके लो वसु द्रव्य।
निज भावों की ध्वजा चढ़ाओ हो जावोगे धन्य॥३॥

१०४

धन्य धन्य दिन आज, समय ये कैसा प्यारा रे।
पंचकल्याणक का उत्सव, यह अतिशय न्यारा रे।टेक॥

बड़ा पुण्य-अवसर यह आया, पंचकल्याणक आज मनाया।
फूला मन यह हुआ सफल, मेरा जीवन सारा रे धन्य॥१॥

जयपुर शहर की छटा निराली, कण-कण में छाई हरियाली।
ज्ञान-ज्योति फैली है मानो, चन्द्र-उजाला है धन्य॥२॥

दूर-दूर से दर्शक आये, भक्ति-भाव भर मन हरषाये।
वीतरागी देव करो अब, भव से पारा रे धन्य॥३॥

समयसार का अमृत झरना, स्याद्वाद कथनी मन हरना।
जिनवाणी की झरती, झर-झर अमृत धारा रे धन्य॥४॥

१०५

अमृत से गगरी भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे।
खुशी-खुशी मिल के चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ।टेक॥

सब साथी मिल कलश सजाओ, मंगलकारी गीत सुनाओ।
मन में आनंद भरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥१॥

इन्द्र-इन्द्राणी हर्ष मनावे, प्रभु-चरणों में शीश झुकावे।
प्रभुजी की छवि निरखो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे। ॥२॥

सुवर्ण-कलश प्रभु उदकनि धारा, अंगे न्हावे जिनवर प्यारा।
स्वामी जगत को खरो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ॥३॥

है सुखकारी सब दु:खहारी, सेवा जिनकी प्यारी-प्यारी।
लेकर 'सरस' को चलो कि न्हवन प्रभु आज करेंगे ।।४।।

१०६

इन्द्रध्वज मंडल भला भया।
देखो देखो देखो जी आनन्द छा गया ।।टेक।।

मध्यलोक के भव्य जिनालय, शाश्वत जिनप्रतिमा सुखकारी।
शुद्धातम के दर्श कराती, अन्तर्मुख छवि लगती प्यारी।।
जिनपूजन का अवसर आ गया, देखो देखो जी.....।।१।।

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरितमय, जग को मुक्ति मार्ग बताती।
ज्ञान भिन्न है, राग भिन्न है, भविजन को सन्देश सुनाती।
भेद-विज्ञान हमें भा गया, देखो देखो देखो जी.....।।२।।

वस्तु कथन्चित नित्य-अनित्य अनेकान्त की महिमा न्यारी।
स्याद्वाद शैली पर मोहित होते हैं, मुनि सुर नर-नारी।।
यह जिनशासन हमें भा गया, देखो देखो देखो जी.....।।३।।

१०७

तू जाग रे चेतन प्राणी कर आतम की अगवानी।
जो आतम को लखतें हैं उनकी है अमर कहानी।।टेक।।

है ज्ञान मात्र निज ज्ञायक जिसमें हैं ज्ञेय झलकते।
यह झलकन भी ज्ञायक है, इसमें नहिं ज्ञेय महकते।।
मै दर्शन ज्ञान स्वरूपी मेरी चैतन्य निशानी।।१।।

अब समकित सावन आया, चिन्मय आनन्द बरसता।
भीगा है कण-कण मेरा, हो गई अखण्ड सरसता।।
समकित की मधु चितवन में झलकी है मुक्ति निशानी।।२।।

ये शाश्वत भव्य जिनालय, है शान्ति बरसती इनमें।
मानों आया सिद्धालय, मेरी बस्ती हो उसमें।।
मैं हू शिवपुर का वासी भव-भव की खतम कहानी।।३।।

१०८

गगन मण्डल में उड़ जाऊँ
तीन लोक के तीर्थक्षेत्र सब वंदन कर आऊँ।।

प्रथम श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर मैं जाऊँ।
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर चरण पूज ध्याऊँ।।१।।

अजित आदि श्री पाश्वनाथ प्रभु की महिमा गाऊँ।
शाश्वत तीर्थराज के दर्शन करके हषाऊँ।।२।।

फिर मंदारगिरि पावापुर वासुपूज्य ध्याऊँ।
हुए पंच कल्याणक प्रभु के पूजन कर आऊँ।।३।।

ऊर्जयंत गिरनार शिखर पर्वत पर फिर जाऊँ।
नेमिनाथ निर्वाण क्षेत्र को वन्दूँ सुख पाऊँ।।४।।

फिर पावापुर महावीर निर्वाण पुरी जाऊँ।
जल मंदिर में चरण पूजकर नाचूं हर्षाऊँ।।५।।

फिर कैलाश शिखर अष्टापद आदिनाथ ध्याऊँ।
ऋषभदेव निर्वाण धरा पर शुद्ध भाव लाऊँ।।६।।

पंच महातीर्थों की यात्रा करके हर्षाऊँ।
सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों पर भी मैं हो आऊँ।।७।।

तीन लोक की तीर्थ वंदना कर निज घर आऊँ।
शुद्धात्म से कर प्रतीति मैं समकित उपजाऊँ।।८।।

फिर रत्नत्रय धारण करके जिन मुनि बन जाऊँ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी शिव पद प्रगटाऊँ।।९।।

१०९

भावना रथ पर चढ़ जाऊँ।
मध्यलोक तेरा द्वीपों तक दर्शन कर आऊँ।।
भावना रथ पर चढ़ जाऊँ।टेक।।

स्वर्ण थाल में वसु विधि प्रासुक द्रव्य सजा लाऊँ।
चार शतक अट्ठावन जिनगृह, पूजन कर आऊँ।।१।।

पंचमेरु गजदंत वृक्ष वक्षारों पर जाऊँ।
गिरि विजयार्ध कुलाचल वन्दूँ, नाचूँ हर्षाऊँ॥२॥

इष्वाकारों मानुषोत्तर के जिन गृह ध्याऊँ।
नंदीश्वर कुन्डल व रुचक गिरि, पूजन कर आऊँ॥३॥

जिन पूजन का सर्वोत्तम फल, भेद ज्ञान लाऊँ।
शुद्धातम का अनुभव करके, सिद्ध स्वपद पाऊँ॥४॥

११०

कर लो जिनवर का गुणगान, आई सुखद घड़ी।
आई सफल घड़ी, देखो मंगल घड़ी॥ करलो.....॥

वीतराग का दर्शन-पूजन भव-भव को सुखकारी।
जिन प्रतिमा की प्यारी छवि लख मैं जाऊं बलिहारी॥१॥

तीर्थंकर सर्वज्ञ हितंकर महा मोक्ष का दाता।
जो भी शरण आपकी आता, तुम सम ही बन जाता॥२॥

प्रभु दर्शन से आर्त रौद्र परिणाम नाश हो जाते।
धर्मध्यान में मन लगता है, शुक्ल ध्यान भी पाते॥३॥

सम्यग्दर्शन हो जाता है मिथ्यातम मिट जाता।
रत्नत्रय की दिव्य शक्ति से कर्म नाश हो जाता॥४॥

निज स्वरूप का दर्शन होता, निज की महिमा आती।
निज स्वभाव साधन के द्वारा सिद्ध स्वगति मिल जाती॥५॥

१११

श्री नेमीकुंवर गिरनारी चाले, मुक्तिवधू को ब्याहें।
रंगराग से भिन्न निराले शुद्धातम को चाहें।टेक।।

भाएँ बारह भावना, समझें जगत असार।
शुद्धातम चिंतन करें, वेश दिगम्बर धार।।
निज चैतन्य सुधारस पीते, पीते नहीं अघावें।।१।।

पंचमहाव्रत अरु समिति, पंचेन्द्रिय जय धार।
षट् आवश्यक पालते, सातों गुण सुखकार।।
अन्तर बाहर संयम धारे, गुण श्रेणी अवगाहें।।२।।

विष सम पंचेन्द्रिय विषय की, चित में नहिं चाह।
शुद्धातम में लीन हो, गही मुक्ति की राह।।
क्षायिक चारित्र कंकण बांधे, तिल तुष भी नहिं चाहें।।३।।

क्षपक श्रेणी चढ़कर लहें, मुक्ति महल का द्वार।
सहज शुद्ध चैतन्य का, अवलंबन ही सार।।
महा मोह क्षय शीघ्र करेंगे, अनंत चतुष्टय धारें।।४।।

११२

जन-जन को अचरज आयो,
नेमी ने रथ मुड़वायो।
नेमिकुंवर के परिणामों में, उपशम रस उमड़ायो।

नेमिकुंवर दुल्हा बन आये; छप्पन कोटि बराती लाये।
ब्याह को रंग उमड़ायो।।

पशुओं के क्रन्दन को सुनकर, जग की स्वारथ वृत्ति देखकर
ब्याह को राग नशायो।।
समुद्रविजय अचरज में भारी, पुत्र विवाह की है तैयारी।
रंग में भंग कैसे आयो।।
राजुल को बाबुल समझावें, बेटी दूजा ब्याह रचावें।
राजुल को नेमी मन भायो।।
शोक बहुत राजुल के मन में किन्तु लगाया चित्त संयम में।
दीक्षा में चित्त रमायो।।

११३

रोम-रोम में नेमिकुंवर के उपशम रस की धारा।
राग द्वेष के बन्धन तोड़े, वेश दिगम्बर धारा।टेक।।

ब्याह करन को आये, संग बराती लाये।
पशुओं को बन्धन में देखा, दया सिन्धु लहराये।।
धिक-धिक जग की स्वारथ वृत्ति कहीं न सुक्ख लघारा।।१।।

राजुल अति अकुलाये, नौ भव की याद दिलाये।
नेमि कहें जग में न किसी का, कोई कभी हो पाये।।
राग रूप अंगारों, द्वारा जलता है जग सारा।।२।।

नौ भव का सुमिरण कर नेमी, आतम तत्त्व विचारे।
शाश्वत ध्रुव चैतन्यराज की, महिमा चित्त में धारें।।
लहराता वैराग्य सिन्धु अब भायें भावना बारा।।३।।

राजुल के प्रति राग तजा है, मुक्ति वधू को ब्याहें।
नग्न दिगम्बर दीक्षा धरकर, आत्म ध्यान लगावें।।
भव बन्धन का नाश करेंगे, पावें सुख अपारा।।४।।

११४

आया पंचकल्याणक महान,
श्री ऋषभ बनेंगे भगवान, आनन्द रस झरता है।

सर्वार्थ सिद्धि से प्रभु जब आयेंगे,
सुरपति गर्भ कल्याणक मनायेंगे,
नाचे गायें करें गुणगान, श्री ऋषभ बनेंगे भगवान।
आनन्द रस झरता है।।१।।

ऋषभ कुंवर का जन्म जब होएगा,
पाण्डुक शिला पर अभिषेक तब होएगा,
प्रभु धारेंगे तीन तीन ज्ञान, श्री ऋषभ बनेंगे भगवान।
आनन्द रस झरता है।।२।।

प्रभु जग की क्षण भंगुरता जानकर,
एक शुद्ध आतम उपादेय मानकर,
फिर धारेंगे मुनिपद महान, श्री ऋषभ बनेंगे भगवान।
आनन्द रस झरता है।।३।।

क्षायिक श्रेणी जब प्रभुजी चढेंगे,
क्षण में केवलज्ञान वरेंगे,
दिव्यध्वनि खिरेगी महान, श्री ऋषभ बनेंगे भगवान।
आनन्द रस झरता है।।४।।

प्रभु जब योग निरोध करेंगे,
मुक्तिपुरी का राज वरेंगे,
तब होगा आनन्द महान, श्री ऋषभ बनेंगे भगवान।
आनन्द रस झरता है।।५।।